Niamat Singh Jain-Tract Series No. 6.

श्रीजिनेन्द्रायनमः

न्यामत सिंह रचित जैन ग्रंथमाला अंक ६

(न्यामत विलास–अंक ६)

(NIAMAT VILAS, NO. 6.)

भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक

जिसमें सेठी व सती का फोटो खींचकर दिखलाया गया है तथा मतीकमल श्री व सती तिलकासुन्दरी व धर्म वीर भविसदत्त का चरित्र–(दासा भविसदत्त चरित्र के अनुसार) यही प्रकार नाटक रूप में दिखाया गया है ॥

जिसको न्यामत सिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार ने सर्व साधारण के हितार्थ रचा।

श्रीवीर निर्वाण सम्वत २४४५

प्रथम बार १००० कापी मूल्य १।।)

पं० घासीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस लखनऊ में छपा सन् १९१९ ॥

श्रीजिनेन्द्राय नमः

नाटक पात्र पुरुषों के नाम

धनवे सेठ हथना पुर का सेठ ॥

भविसदत्त कमलश्री का पुत्र ॥

बंधुदत्त सरूपा का पुत्र

नाटक पात्र स्त्रियों के नाम

कमलश्री धनवे सेठ की पहली राणी

सरूपा धनवे सेठ की दूसरी राणी

तिलका सुन्दरी भविसदत्त की पटराणी

सुमता राजा की पुत्री और भविसदत्त की दूसरी राणी
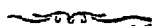
नोटिस (३)

न्यामत विलास के निम्न लिखित भाग तय्यार हो चुके हैं परन्तु अभी तक हमारे पास वह ही भाग छपकर आए हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है—अन्य भाग भी छप रहे हैं और शीघ्र ही आने वाले हैं ॥

			हिन्दी	उर्दू
१ जिनेन्द्र भजन माला	....	....		
२ जैन भजन रत्नावली	....	....	।)	
३ जैन भजन पुष्पावली	....	....		
४ पंच कल्याणक नाटक	....	....		
५ न्यामत नीति	....	....		
६ भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक		....	१॥)	१)
७ जैन भजन मुक्तावली	...	....	≈)	
८ राजल भजन एकादशी	....	....	-)	
९ स्त्री गान जैन भजन पचीसी	....	....	=)	
१० कलयुग लीला भजनावली	....	....	-)॥	-॥)
११ कुन्ती नाटक	....	....	=)	
१२ चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	....	....	॥=)	।≈)
१३ अनाथ रुदन	....	....	-)	
१४ जैन कालिज भजनावली	....	....		
१५ राम चरित्र भजन मंजरी	....	....		
१६ राजल वैराग्य माला	....	....		
१७ ईश्वर स्वरूप दर्पण	....	....		
१८ जैन भजन शतक	....	....	।)	
१९ थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	....	....	≈)	=)
२० मैना सुन्दरी नाटक	....	....	१॥)	
	सजिल्द	....	१॥।)	

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड हिसार

मु० हिसार (पंजाब)

विशेष सूचना ।

(१) यह भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक-भविसदत्त चरित्र जैन शास्त्र के आधार पर बनाया गया है । भविसदत्त को हथना पुर में राज तिलक होने के बाद का हाल नाटक बढ़ने के भय से इस नाटक के आखीर में केवल नोट के तौर पर दिखाया गया है ॥

(२) इस नाटक के लिये बहुत से भाइयों की हमारे पास चिट्ठियां आईं मगर कारण वशात् इस नाटक के छपने में देरी हुई इस सबब से यह नाटक न भेज सके सो क्षमा करें । अब यह नाटक उर्दू और नागरी दोनों भाषाओं में जुदा जुदा छपकर तय्यार हो गया है जो भाई चाहें मंगा सकते हैं । उर्दू पुस्तक की कीमत १) है और नागरी की १॥) है ॥

(३) इस नाटक को किस्सा कहानी समझकर इसकी अभिनय नहीं करनी चाहिये बल्कि जैन शास्त्र समझकर इसको बिनय पूर्वक पढ़ें क्योंकि इसमें श्री जैन शास्त्र का रहस दिखाया गया है ॥

न्यामत सिंह

श्रीजिनेन्द्रायनमः

भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक ।

पहला ऐक्ट

धनवे सेठ का नाराज़ होना और कमलश्री को महल से निकालना और सरूपा से दूसरी शादी करना-भविसदत्त का पिता से नाराज़ होकर माता के पास जाना-भविसदत्त और बदुदत्त दोनों भाइयों का परदेश में जाना-बदुदत्त का भविसदत्त को धोका देकर अकेला मैनागिर परबत पर छोड़ना-भविसदत्त का हैरान होना और एक गुफा में प्रवेश करना और तिलकपुर पट्टन में पहोंचना ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः ।
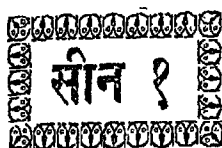
(रंगभूमी का परदा)

सब परियों का मिलकर भगवान की स्तुति करना ॥
चाल-(जयमनी कल्याण थ्येट्रिकल-तीन ताल-जय जय इन्द्रासन पति ज्ञानी ॥)

——:o:——

जय जय जय जीवन हितकारी-जय भव गिर भारी मे तारी ॥ दुखिया दुख हारी-सब सुखकारी-जग ज्ञातारी ॥ जय जय शिव मग नेतारी- ॥ जय० ॥

(तान) सानी धापा-नीधा पामा-धापा-मागा-पामा गोरे-मागारे सा ॥ जो कोई तेरे गुण गावे-मन बच तनकर ध्यान लगावे ॥ सोही स्वर्ग मुकत फल पाय-जय० ॥ १ ॥

जय सती कमलश्री पटरानी-तिलका सुन्दर सब मनमानी ॥ जय श्री भविसदत्त शिवराय ॥ जय० ॥ २ ॥
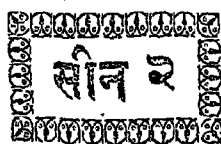
(महल का परदा)

सती कमलश्री का महल में बैठे हुवे नजर आना और उसके अशुभ कर्म का उदय में आना-धनवे सेठका सरूपा का दिलमें खयाल करते हुये

प्रवेश करना और कमलश्री को देखकर यकायक नाराज़ होना-कमलश्री का अर्ज़ करना-धनदे का न मानना और कमलश्री को महल से निकालना और कमलश्री का रोते हुये पीहर को चला जाना ॥

—:0:—

धन० (चाल-अरे लाल देव इस तरफ जल्द आ)

इधर कर निगाह आंख ऊपर उठा ।
आज तेरेसे मेरा दिल फिर गया ॥ १ ॥
तेरा मुख कमल गरचे है गुल अज़ार ॥
मगर आज लगता है यह मुझको खार ॥ २ ॥
आज तू मेरे मनको भाती नहीं ॥
यह सूरत नज़र में समाती नहीं ॥ ३ ॥
न अब कुछ तेरे से सरोकार है ॥
परे हट कि जी मेरा बेज़ार है ॥ ४ ॥

कम० (हाथ जोड़ कर) हे प्राणनाथ मैं आपके चर्णों की दासी-मुझ अबला पर आज ऐसी गज़ब की कड़कती हुई बिजली क्यों गिरी जाती है-क्यों आपकी निगाहे मोहब्बत बिन कारण मेरे से फिरी जाती है ॥ (शेर)

यकायक खता मुझसे क्या हो गई ॥
क्या एकदम से क़िसमत मेरी सो गई ॥ १ ॥
आज किस लिये हो गए बद गुमां ॥
जो कुछ बात है मुझसे कीजे अयां ॥ २ ॥

धन० [शेर] क्या कहूं मुझ को नज़र आती खता कुछ भी नहीं
सच अगर पूछो तो बस तेरी खता कुछभी नहीं ॥ १

क्या खता सीता की थी जो रामने बन में तजी ॥
राम लछमन क्यों गए बनमें खता कुछ भी नहीं २
किस लिये मैना सती को जा के कुष्टी से ब्याहा ॥
क्यों गिरा श्रीपाल सागर में खता कुछभी नहीं ३॥
चीर द्रोपद का हरा दरबार में थी क्या खता ॥
क्यों सुदर्शन को देईशूली खता कुछ भी नहीं ४॥
थी पवंजयको मोहब्बत अंजना से किस क़दर ॥
एक दम दिल फिर गया देखो खता कुछभी नहीं ५
बस समझ ले तेरा गर्दिश में सितारा आगया॥
कर्मकी पलटी है रेखा और खता कुछभी नहीं ६॥

कुसु० आखिर कोई सबब

धन० तेरे पाप का उदय—और कोई नहीं सबब

कुसु० कोई खता

धन० कोई नहीं खता

कुसु० मुआफी की कोई तदबीर

धन० तेरे लिये कोई नहीं तदबीर

कुसु० अय प्राण प्यारे बिला वजह अपने चितको ऐसा कठोर न बनाओ।

धन० बस मेरी नजरों से दूर हो—अपने पीहर को चली जाओ।

कुसु० (शैर) अय प्राणनाथ बे वजह इतना जुल्म न कर।
मेरी तरफ को देख तू इतना सितम न कर ॥

वहही कमलश्री हूं क्या आज और बनगई ।
फेरों के वचन याद कर दूर एक दम न कर ॥

धन० (शेर) बस मुझसे ज्यादा कीलोक़ाल अय अधम न कर।
कमवख्त तू जुबान को इतना गरम न कर ॥
होगी कभी कमलश्री पर अवतो खार है।
नफ़रत का मेरे छा गया दिल में ग़ुबार है ॥

कम० (चाल-हाए अच्छे पिया नहीं देश बुलाओ)[3]

प्यारे विन कारण मोहे नेक़ विचारो क्यों दुर्वचन सुनावत हो
यह मैंने माना हुवा शुभ करम तो मुझ से जुदा ॥
अशुभ करम भी तो मेरा नहीं रहेगा सदा ॥
कभी तो आएगी फ़सले वहार दुनिया में।
खिजां का दौर तो रहता नहीं हमेशा पिया ॥
प्यारे करमोंकी गतिको नहीं जाने क्यों चित कठिन बनावतहो॥
क्या राजा राम को था फिर न उसका राज मिला ।
क्या द्रोपदी का नहीं था सभा में चीर बढ़ा ॥
क्या अंजना से पवन ने क्षमा नहीं मांगी।
सिया के आगे न क्या राम शरम सार हुवा ॥
यूं हीं कभी तो कर्म फिरेंगे हमारे काहे को दुख दर्शावत हो ॥

धन० वेशक ठीक है तेरे कर्म की मीमानसा और ठीक है
तेरा विचार-पर इस समय मेरे दिलके फैसले के सामने
तेरी सब दलील हैं वेकार [शेर]
वढ़ाकर वात को क्यों जी मेरा वेज़ार करती है।

जो दिलही फिर गया फिर किस लिये इसरार करतीहै ॥
इलाज अबतो हमारे से तुम्हारा हो नहीं सकता ।
सबर करले तेरे मनका विचारा हो नहीं सकता ॥२॥
तेरे हक्कमें यही बहतर है पीहर को चली जाओ ।
मेरे महलों में अब तेरा गुजारा हो नहीं सकता ॥३॥

कम० (शैर) चली जाउंगी महलों से मगर घरमें तो रहने दो ।
क्या हक इतना भी इस घरमें हमारा हो नहीं सकता ॥
जरा करके दया बालम वजह कुछ तो बता दीजे ।
कि क्यों इस घरमें भी रहना हमारा हो नहीं सकता ॥

धन० (शैर) निपट नादान मूरख किस लिये इसरार करती है ।
दलीलों से तुम्हारी कुछ सहारा हो नहीं सकता ॥
मुआमला साफ है अब तक समझमें क्यों नहीं आया ।
दो तलवारों का इक घरमें गुजारा हो नहीं सकता ॥

कम० क्या मतलब

धन० (गुस्सेसे) कमबख्त मतलब बिलकुल अयां है जरा कान देकर सुन खयाल कहां है । धनदत्त सेठ की लड़की सरूपा पे मेरी तबीयत आई है—उसी के खयाल ने तेरे से नफ़रत दिलाई है ॥ (शैर)

समाई दिलमें जो सूरत हटाई जा नहीं सकती ।
मयां में देख दो तलवार हरगिज आ नहीं सकती ॥

कम० धन० (दोनोंका मिलकर गाना*चाल-दिन रतियां ना छेड़ासंयां)

कुसु० (चरण पकड़ कर) रिस करके ना दीजे गारी-मैं दुखयारी-अबला नारी-शर्ण तुम्हारी हां। तुम मानो जी सांवरिया। धन० जाओ उठ जाओ पीहरवा ॥

कुसु० सखियों में जागी पत मोरी-मतना करवो बालम जोरी

धन० एक नहीं मानूं मैं तोरी-कुसु० हठ ना बना-

धन० परे हट जा- कुसु० जिया ना जला-मान ले कहा-हां हां हां हां हां हां ॥ रिस करके० ॥

धन० [गुस्से से] नाहक ज़िद करती हो-मुझे हैरान करती हो- अब तुम्हारा रोना धोना सब फ़ज़ूल है-मुझे तुम्हारी कोई बात नहीं क़बूल है-अब मेरे फ़ैसले को किसी तरदीद की जरूरत नहीं-तुम्हारे यहां रहने की कोई सूरत नहीं ॥

कुसु० हे प्राणनाथ ज़रा दिलमें सोचो विचारो-कुछतो हृदय में दया का भाव धारो-बिना विचारे जो काम करता है-आखिर को पछताना पड़ता है-मैं हाथ जोड़ कर अर्दास करती हूं-चर्णों में सीस धरती हूं ॥ आप चाहे एक नहीं सौ सरूपा लाएं जिस तरह चाहे मन माना सुख उठाएं। मैं आप दोनों की बांदी होकर रहूंगी- निश दिन आपकी सेवा करूंगी। पर आप मुझे पीहर न पठाएं-मेरी रही सही लाज न गंवाएं-औरत बिना बुलाए पीहर को जाए-बहतर है कि ज़हर खा कर

मरजाए। आप वार वार इंकार न करें-मेरी अर्दासको स्वीकार करें॥ (शेर)

हमारे जी जलाने का समर अच्छा नहीं होगा।
पिया नाहक़ सताने का असर अच्छा नहीं होगा॥ १॥
सताना जी जलाना देख सतियों का नहीं अच्छा।
जो दिलसे आह निकलेंगी तो फिर अच्छा नहीं होगा॥२॥
अगर घरसे निकालोगे तो करलूंगी सबर मनमें।
चली जाऊंगी पीहर को मगर अच्छा नहीं होगा॥३॥
ग़ज़ब करतेहैं जो औरत का यूं अपमान करते हैं।
समझलो इसका दुनिया में असर अच्छा नहीं होगा॥४॥

धन्न० बस बस जुबान बंदकर महल से बाहर निकल (शेर)

कहना और सुनना तेरा अबतो मुझे भाता नहीं।
गिरयोज़ारी पे तेरी मुझको रहम आता नहीं॥
बस चली पीहर को जा और महल से बाहर निकल।
बहतरी का और कोई चारा नज़र आता नहीं॥

कम्म० (रोते हुवे बाहर निकलना) (चाल-हमीर-तीन ताल डुमरी-मोरे प्यारे पिया घर आवोजी)

हाए कर्म महा दुखदाई जी।
सुखमें दुख दुखमें सुख होवे॥
अमृत विष हो जाई जी॥ हाए०॥ १॥
बिन कारण सिया घरसे निकाली।
बन बनमें दुख पाई जी॥ हाए०॥ २॥
मैना सती कुष्टी वर दीनो।

कुछ नहीं पार बसाई जी ॥ हाए० ॥ ३ ॥
सब सखियन मिल ताने देंगी ।
हमरी सकल पत जाई जी ॥ हाए० ॥ ४ ॥
अपने करम जिया आपही भोगे ॥
किसको दोष लगाई जी ॥ हाए० ॥ ५ ॥
सूनस बसो पिया महल तिहारो ।
हम सब तजकर जाई जी ॥ हाए० ॥ ६ ॥

(रोते हुवे चला जाना परदा गिरना)

सीन ३
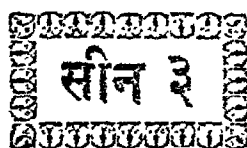
(महल का परदा)

भविसदत्त का मदरसे से पढ़कर आना और सूना महल देख कर हैरान होना । अपनी माता के चले जाने का हाल सुनकर नाराज़ होना और माता के पास जाना ॥

भवि० हा आज यह क्या माजरा है तमाम महल सुनसान नज़र आता है सख्त हैरान हूं दिल घबराता है । क्या सितम—क्या ग़ज़ब—क्या मूजब—क्या सबब ॥

(शेर)

महल था कि मातम सरा हो गया ।
अभी क्या था एक दम में क्या हो गया ॥

आज क्यों ग़म की घटा दिलपे चढ़ी आती है ।
दरो दीवार से रोने की सदा आती है ॥

फूफी० (रोते हुवे आकर) बेटा शान्ती कर

अवि० हैं माता कैसी शान्ती ! ! ! (शैर)

क्यों अश्क आखों से जारी हैं ।
यह कैसी गिरयो ज़ारी है ॥
समझ में कुछ नहीं आता ।
यह क्या हालत तुम्हारी है ॥
मैं गया इस्कूल में पीछे से यह क्या हो गया ।
है कहां माता मेरी सच तो बता क्या हो गया ॥

बांदी० (शैर) हम से क्या पूछो हो यह क्या हो गया !!
जो लिखा तक़दीर में था हो गया ॥

अवि० (शैर) आखरिश क्योंकर हुवा किसने किया क्या होगया
साफ़ बतलादो मुझे किसतौर से क्या होगया ॥

बांदी० (शैर) नर्म दिल महाराज का इकदम से पत्थर हो गया
आफ़ताब इक़बाल का मनहूस अख़तर होगया
आपकी माताको है इसदम दियाघरसे निकाल
वह गई रोती हुई पीहर बसद रंजे कमाल ॥

अवि० अफ़सोस सद अफ़सोस । (शैर)
अगर उस वक्त मैं होता तो फिर ऐसा नहीं होता ॥
ज़मीं शायद हिला देता मगर ऐसा नहीं होता ॥
अरे बदबख्त तेरे जीते जी हुवा अपमान माता का ॥
यह बहतर था तु दुनिया में नहीं पैदा हुवा होता ॥

जिस पुत्र के होते हुवे माता दुख पाए—वह पुत्र नहीं महज़ मिट्टी की नापाक तसवीर है—दुनिया में वे इज्ज़त व वे तोक़ीर है—मगर क्या करूं लाचार हूं—इधर पिता उधर माता । (शेर)

समझ में कुछ मेरी अबतक नहीं तदबीर आई है ॥
उधर देखूं तो कुंवा है इधर देखूं तो खाई है ॥

खैर जो हुवा सो हुवा अभी जल्दी न कर ज़रा दिल में सबर कर चल कर माता की तसल्ली कर—अनक़रीब वह वक्त आनेवाला है कि मैं अपने कर्मों का बल दिखाऊंगा इस सख्ती का फल चखाऊंगा ॥ (शेर)

इक रोज़ मुआफ़ी मांगने माता से आएगा ।
चरणों में कमल के वह आप सर झुकाएगा ॥
करके जो ऐसी मैं न दिखाऊं दिलावरी ।
मुझको कमल का पुत्र न कहना कभी कोई ॥

(चला जाना)

सीन ४
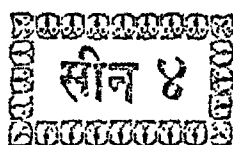
(बाज़ार का परदा)

मधुदत्त का बाज़ार में खड़े हुवे नज़र आना—चम्पा व चैत्ती दो-औरतों का आना और बात चीत करना—औरतों का ताना देना मधुदत्त का शरमा कर चला जाना और सफ़ा का इ[illegible] करना ॥

चंपा० अजी ज़रा रास्ता छोड़ दीजिये

बधु० क्यों तुम्हारे बाबा की सड़क है क्या-नहीं छोड़ते

(चाल चूरण वालों की-चलत)

चंबे० मूरख मंड बचन मत बोले-यूंही जोर बदन में तोले ॥
गलियों रुलता फिरता डोले-रास्ता छोड़ परे को होले ॥
कैसा मूरख लुचा गुंडा-लेकर करमें सिरि डंडा ।
खाकर मुफ़ती हलवा मंडा-बन रहा जांभाजीका संडा ॥

चंपा० लिखने पढ़ने की नहीं सार-जाने एक नहीं दो चार ।
कैसा बनज और व्योपार-कोरा मूरख निपट गंवार ॥
इतना बड़ा वैश्य का बैल-फिरता गलियों में अलबेल ।
बेचन जाने नहीं गुड़ तेल-यूंही बन रहा बांका छैल ॥

बधु० धनवे सेठ जो साहुकार-उसका मैं हूं राज कंवार ।
नामी बधुदत्त सरदार-मूंह से बोलो बचन संभार ॥

चंबे० जो हैं सेठ पुत्र कहलाते-कोठी छोड़ कहीं नहीं जाते ।
तुझसे फिरते धक्के खाते-निश दिन जूतीको चिटकाते ॥
देखो भविसदत्त गुनवान-चौदह विद्या का निधान ।
बन रहा लाखों में परधान-जिसका राजा करते मान ॥

[illegible] एक यह लखपा का कपूत-बिलकुल बारा शुद्धी ऊत ।
जाने कुछ भी नहीं करतूत-करता फिरता खूत कसूत ॥
जो हैं सच्चे-सेठ कंवार-करते लाखों का व्योपार ।
जाकर सात समंदर पार-जिनको जाने सब संसार ॥

बधु० घरमें लाखों का सामान-करते काम मुनीम दीवान ।
हमको कौन गरज़ नादान-बैठे जाकर के दूकान ॥

चंदे० हां हां ठीक कही निखट्टू-अनपढ मूरख जाहिल भुट्टू ।
परके धनपर होरहा लट्टू-फिरता बिन लगामका टट्टू ॥
जब से तुझसे रह गए वैश-तबसे उजड़ा भारत देश ।
करते फिरें डगर पर वेश-जानें नहीं विद्या का लेश ॥

चंपा०(दोहा) पाय पिता की लक्ष्मी मनमें नहीं समात ।
फिरे नखट्टूघूमता दिवस गिने नहीं रात ॥
गुरु पिता की लक्ष्मी होती मात समान ॥
जो भोगे घर बैठ कर बांधे पाप महान ॥
कला बहत्तर पुरुष की जिनमें दो सरदार ।
एक जीव की जीव का दूजे जीव उद्धार ॥

(चलत) लिखना पढ़ना जाकर सीख-धन कमाना जाकर सीख ।
बनज बनाना जाकर सीख-दीपान्तर में जाना सीख ॥
चल हट जाकर अपना काम-खोता फिरे बाप का नाम ।
छोड़ो रस्ता शारे आम-हमको जाने दे नाकाम ॥

(चंदकी चंपा का बधूदत्त को हटाकर चला जाना)

बधु० अफ़सोस मैंने अबतक एक पैसा नहीं कमाया ।
सदा बाप का धन खाया और दोस्तों में लुटाया ॥
इन औरतों ने जो मुझे नसीहत की है अगरचे वह किसी क़दर सख्त है मगर दर असल बिलकुल ठीक और दुरुस्त है—अब मैं अपने दिल में पक्का इरादा करता हूं कि परदेश को जरूर जाऊं और हाथों से धन कमाकर लाऊं—बेशक बनज व्योपार करना वैश्य का मुख्य कर्म है और मनुष्य जनम का परम धर्म है ॥

(चला जाना)

सीन ५

(बधुदत्त के मकान का परदा)
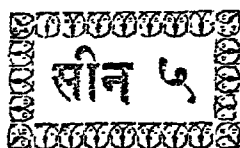
बधुदत्त का बैठे हुवे नज़र आना और भविसदत्त का आना और दोनों का बात चीत करना ॥

बधु० (उठकर प्रणाम करके) आइये भाई साहेब जय जिनेन्द्र

भवि० जय जिनेन्द्र भाई सुखी हो ॥

बधु० आप की कृपा से सब आनंद है आज आप के बहुत दिनों में दर्शन हुवे ॥

भवि० हाँ भाई दूरका अंतर है बिना प्रयोजन कैसे मिलना हो सकता है ॥

बधु० फ़रमाइये—आज आपका कैसे शुभागमन हुवा ॥

भवि० भाई मैंने सुना है कि आपका परदेश जाने का विचार है क्या यह बात सच है ॥

बधु० भाई साहेब बेशक यह बात सच है व्योपार करने के लिये मेरा परदेश जाने का विचार है और पिता जीने भी स्वीकार कर लिया है ॥

भवि० फिर किस तरफ़ और किस देश में जाने का विचार है

बधु० भाई मेरा तो यह विचार है कि अनेक द्वीप द्वीपांतर नगर पट्टन और सागर में खूब देशाटन करूं ॥

भवि० आपके ऐसे महान् संकल्प करने का आखिर क्या कारण हुवा ।

वधु० भाई साहेब एक दिन मैं बाजार में खड़ा हुवा था एक तरफसे दो स्त्रियां आई और उन्होंने मुझे यह ताना दिया।

[दोहा]

गुरु पिता की लक्ष्मी होती मात समान।
जो भोगे घर बैठ कर बांधे पाप महान॥

यह बात सुनकर मेरे चित्त को बड़ी चोट लगी—बस मैंने उसीदम यह विचार कर लिया कि परदेश में जाकर अपने हाथों से द्रव्य कमाकर लाऊं॥

भवि० बहुत ठीक—आपका बड़ा सुंदर विचार है। उद्यम करना मनुष्य का पहिला कर्तव्य है खासकर वैश्य पुत्र का यह परम धर्म है जो पुरुष निरुद्यमी होकर घरमें पड़े रहते हैं महा मधम पुरुष हैं और उनका जीवन निष्फल है—आपको इस शुभ कार्य में सुफलता प्राप्त हो॥

वधु० क्या आपका भी कुछ इरादा है॥

भवि हां भाई—है तो कुछ मेरा भी विचार॥

वधु० अहो भाग्य—यह तो बड़े आनंद की बात है निःसंदेह आप अपना पक्का विचार करलें इससे अच्छा मौका फिर नहीं मिलेगा—दोनों मिलकर परदेश में अच्छी तरह व्योपार कर सकेंगे। चूकना नहीं—बस आप जरूर तय्यार हो जाएं॥

भवि० (खड़ा होकर) अच्छा तो मैं जाकर माता जी की आज्ञा लेता हूं ॥

बंधु० (खड़ा होकर) और प्रणाम करके बहुत अच्छा-जयजिनेन्द्र

भवि० जय जिनेन्द्र (चला जाना)

सीन ६

(सरूपा के महल का परदा)

बंधुदत्त का अपनी माता के पास जाना और बात चीत करना ॥

बंधु० माता जी प्रणाम

सरू० चिरंजीव रहो—कहो बेटा क्या विचार रहा ॥

बंधु० बस माता जी अबतो परदेश जानेका विचार पक्का हो गया । पिता जी ने शहर में मुनादी भी करवा दी है । भाई भविसदत्त भी संग चलने को तय्यार है ॥

सरू० अच्छा बेटा तेरा काम सुफल हो—क्या भविसदत्त जरूर जाएगा ?

बंधु० हां माता जी जरूर जाएगा अभी मुझसे इक़रार करके गया है ॥

सरू० बेटा क्या मैं यक़ीन करलूं कि तू दुनिया में मेरे लिये पूरा आराम का सामान बनादेगा ॥

बंधु० क्यों नहीं—क्या आपको इसमें शक है—क्या मुझमें

किसी कामके करने की हिम्मत नहीं ॥

सरू० नहीं नहीं–यह कौन कहता है कि तुझमें हिम्मत नहीं–बेशक तू हर एक काम को कर सकता है– मगर करे जब ना ॥

बघु० क्या मैंने कभी आपके हुक्म की तामील नहीं की क्या आपको इस वक्त कोई दुख है ॥

सरू० नहीं बेटा तेरे होते मुझे दुख क्या हो सकता है–मगर जब तक एक कांटा मेरे पाओं से निकाला न जाएगा तब तक मैं बे खटके सुख का कदम दुनिया में नहीं डाल सकती ॥

बघु० कांटा पलकों से निकालने को तय्यार हूं ॥

सरू० नहीं नहीं वह कांटा तलवार की नोक से निकल सकता है ॥

बघु० क्या किसी का खून ॥

सरू० हां हां खून–खून भी उसका जो तेरा दाहना बाज़ू है बस वही तेरा दाहना बाज़ू सख्त कांटा बन कर मुद्दत से मेरे सीने में खटक रहा है ॥

बघु० क्या मतलब मैं सख्त हैरान हूं मेरी समझ में अभी तक़ कुछ नहीं आया ॥

सरू० अरे मूरख तेरी मावसी कमलश्री का पुत्र भविष्-दत्त-जब तक वह न मारा जाएगा–तब तक मैं क्या तू भी आराम से ज़िन्दगी बसर न कर सकेगा– अब समझा ॥

बधु० हैं माता यह क्या-क्या भाई का खून कभी अच्छा हो सकता है ? (शेर)

उठाऊं कैसे सरपे खून नाहक़ अपने भाई का ॥
लगाऊं किस तरह मैं अपने मुंहपे दाग़ स्याही का ॥

सरू० तू अभी नादान है-तू दुनिया और घरबार के मुआमलों को क्या जाने-देख भविसदत्त बड़ा गुण वान है तमाम साहूकार बल्कि राजा तक उसका मान करते हैं-उमर में भी वह तुझसे बड़ा है-बस तमाम घरबार का वही मालिक है-उसके जीते जी तेरा कोई भी हक़ नहीं हो सकता-उसके मरने से ही तुझको कुछ मिल सकता है-अगर ऐसा न हुवा तो फिर तुझे और मुझे दोनों को एक दिन इस राज पाट से हाथ धोना पड़ेगा ॥

बधु० अच्छा माता तेरी मरज़ी-अगर ऐसा ही मनशा है तो मैं पहली ही मंज़िल में उसका काम तमाम करूंगा और तेरी दिली मुराद पूरी करूंगा ॥ (शेर)

ज़ुल्म के तारे मैं चमका दूंगा जा दरिया में ॥
और मक्कारी की छादूंगा घटा दरिया में ॥
अपनी फ़ितरत का चलाऊंगा वह चक्कर उलटा ॥
मां से मिलने नहीं पाएगा वह आकर उलटा ॥

सरू० शाबाश बेटा-बस मैं तुझसे यही एक काम कराना चाहती हूं-अब मुझे यक़ीन हो गया कि ज़रूर तेरी बेबाकी और चालाकी का जादू असर करेगा-अच्छा

बेटा जाओ--चलने का इंतज़ाम कामिल करो और अपनी दिली मुराद हासिल करो ॥

(बधुदत्त का चला जाना)

सीन ७
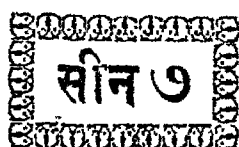
कमलश्री के महल का परदा

भविसदत्त का अपनी माता के पास जाना और बात चीत करना

भवि० माता जी प्रणाम— (शेर)

आज माता मैंने सुनी है यह बात ॥

है परदेश जाता बधुदत्त भ्रात ॥

महाजन बहुत संग में जाएंगे ॥

प्रोहण बहुत भरके ले जाएंगे ॥

करूंगा सफ़र मैं भी भाई के लार ॥

सो आज्ञा मुझे दीजे करके विचार ॥

कम० बेटा कैसी भोली बातें करते हो—बिना विचारे अपने आप मुसीबत में पड़ते हो (गाना)

(चाल-(इन्दर सभा) अरे लाल देव इस तरफ़ जल्द आ)

भूल इस तरह का न कीजो खयाल ॥

मेरे घरके दीपक मेरे नो निहाल ॥ १ ॥

बधुदत्त मक्कार नाकार है ॥

कुबुद्धि कुटिल दुष्ट बदकार है ॥ २ ॥

बदों से न होगा कभी नेक काम ॥
न लेना सरूपा बधुदत्त का नाम ॥ ३ ॥
बधु संग में जाना अच्छा नहीं ॥
बदों के साथ रहना अच्छा नहीं ॥ ४ ॥
अगर संग में उसके तू जाएगा ॥
समंदर में तुझको गिरा आएगा ॥ ५ ॥

भवि० माता यह भविसदत्त तेरी पवित्र कूख से पैदा हुवा है किस की ताक़त है जो इसको कोई नीचा दिखा सके—जब तक मेरा इक़बाल चढ़ा हुवा है किसकी मजाल है जो मेरी तरफ़ आंख उठा कर देख सके—नहीं मालूम आज तेरे सम्यक्ती हृदय में ऐसी शंका और कमज़ोरी क्यों आई-क्यों इतनी कायरता की बात अपनी ज़ुबान पर लाई ॥

कम० बेटा माना तेरा इक़बाल चढ़ा हुवा है मगर आज कल मेरा सितारा गरदिश में आ रहा है क्या तू नहीं जानता-तेरे पिता ने बिन कारण मुझे घरसे निकाला--हम दोनों को मुसीबत में डाला--मैं पहले ही कर्मों से हारी क़िसमत की मारी दुखियारी हो रही हूं--बधुदत्त के साथ तेरे परदेश जाने की बात सुनकर मन घबराता है कलेजा मुंह को आता है बदन थर्राता है दिल पाश पाश हुवा जाता है—दूध का जला छाछ को फूंक फूंक कर पीता है—इसी लिये तुझको परदेश जाने की आज्ञा देने में

साहस नहीं होता है-काश अगर वसुदत्त ने रास्ते में तुझ को धोका दिया और उसका वार चल गया तो बस मेरे लिये ज़मीन और आसमान दोनों पाट मिल जाएंगे-सख्त मुसीबतों के दरवाज़े खुल जाएंगे--दिन से रात हो जाएगी--मेरी तमाम उमीदें खाक में मिल जाएंगी-मुझे तो पती ने पहले ही यह दिन दिखा रक्खे हैं-अगर तू भी चल दिया तो फिर दुनिया में मेरे लिये कोई भी सहारा न रहेगा-बस मेरा कहना मानजा--अपने इरादे से बाज़ आ ॥

भवि० माता-पिता की सखतियों का ज़रा खयाल न कर-घर से निकाले जाने का हरगिज़ मलाल न कर-जब मैं तेरा हुक्म बजालाने को मौजूद हूं तो तुझे क्या ग़म है-तू मुझे मामूली बच्चा न समझ-मैं कमलश्री का वह शेर हूं कि अगर तेरे दिलकी आरज़ू की आंख का ज़रा सा इशारा पाकर मेरे दिलकी बिजली एक बार कड़क जाए तो ।

(शैर)

ज़मी फट जाए और यह आसमां चक्कर में आजाए ॥
तेरा दुशमन खोफ़ खाकर ज़मीं अंदर समा जाए ॥
पिता आकर तेरे चूमे क़दम यह बातही क्या है ।
स्वर्ग को छोड़ कर इन्दर तेरे चरणों में आजाए ॥

माता दिलको तसल्ली दो-प्रसन्न होकर मुझे परदेश जाने की आज्ञा सुनादो दिलमें यकीन रक्खो-भविसदत्त

किसी से डरने वाला नहीं—ऐसी जल्दी किसी से मरने वाला नहीं—बहुत जल्द सफ़र से वापिस आउंगा—तेरी सब आर्जू पूरी करके दिखाउंगा ॥

कम० अच्छा कंवर मैं खुशी से आज्ञा देती हूं मगर देखना रास्ते में होशियारी से रहना और चतुराई से काम करना—बधुदत्त अगरचे बदकारहै मगर तेरा छोटा भाई है—उसकी बातों पे न जाना अगर कोई बदी भी करे तो उसको हरगिज़ खयाल में न लाना—मगर बधुदत्त को किसी प्रकार से दुख न होने देना—(दोहा)

सुत दारा सब मिलतहैं मिलें कुटम परिवार ।
पर भाई संसार में मिले न बारम बार ॥ १ ॥
भाई से प्यारा नहीं कोई जगत मझार ।
राज पाट धन संपदा तन मन दीजे वार ॥ २ ॥
खड़े रहें माता पिता पुरजन सुत दस बीस ।
इक अपने भाई बिना कौन कटाए सीस ॥ ३ ॥

भवि० माता ऐसा ही होगा—मैं बधुदत्त को दिलोजान से रक्खूंगा चाहे वह हज़ार बुराई करे मैं हरगिज़ हरगिज़ खयाल में न लाऊंगा ॥

कम० बेटा परदेश में धर्म को न भूल जाना—तन मन धन से पालन करते रहना—धर्म ही जगतमें सार है—

(दोहा)

धर्म करत संसार सुख धर्म करत निर्वाण ।
धर्म शील मत छोड़ियो जबतक घटमें प्राण ॥

(शैर) बराबर उमर की छोटी बड़ी पर सभी सारी ।
समझना सबको ऐसा जैसा तू मुझको समझता है ॥

भवि० माता-धर्म मेरा प्राण है-मैं इसे हरगिज़ न भूलूंगा—(शैर)

जान अगर जाए तो जाए धर्म जा सकता नहीं ॥
भविसदत्त के दिल में हरगिज़ पाप आ सकता नहीं ॥
झूट चोरी द्यूत मद्य मांस सबका त्याग है ॥
ध्यान परनारी का मेरे मनमें आ सकता नहीं ॥

कम० (मस्तक पर तिलक करके) धन्य हो कंवर तेरे पवित्र हृदय को-जा मैं अपने हृदय में धीर धरती हूं-तुझको धर्म के हवाले करती हूं ॥

भवि० (चरणों में सर झुका कर) माता जी आप के सारे चरणों को प्रणाम है ॥

कम० चिरंजीव बेटा (भविसदत्त का रवाना होना)

सीन ८

(जहाज़ का परदा)

सब महाजनों का आना-बंधुदत्त का आना-भविसदत्त का आना-सेठ धनवे का आना-दोनों लड़कों का पिता को प्रणाम करना-सेठ जी का दोनों लड़कों और महाजनों को उपदेश करना और इनका जहाज़ पर सवार होकर रतनद्वीप को रवाना होना ॥

सेठ कंवर भविसदत्त—बेटा बधुदत्त परदेश में तुम दोनों भाई प्रेम से रहना—बड़ी होशियारी से सफ़र करना (गाना—चाल—क़त्ल मत करना मुझे तेग़ो तबर से देखना)

मिलके रहना प्यार से तुम दोनों भाई देखना ॥
भूल मत लाना कभी दिलमें सियाही देखना ॥१॥
काम वह करना तुम्हारा नाम हो परदेश में ॥
वह नहीं करना कि हो जगमें हंसाई देखना ॥२॥
चोर पाखंडी जुवारी दुष्ट और पापी गंवार ॥
भूलकर करना न इनसे आशनाई देखना ॥ ३ ॥
वेश्वा परनार दासी से अलग रहना सदा ॥
शील संजम पर न आजाए सियाही देखना ॥ ४ ॥
अय बनिक लोगो सुनो दिल में यही रखना खयाल ॥
आपके परधान हैं यह दोनों भाई देखना ॥ ५ ॥
सबके सब आपसमें मिल व्योपार करना ध्यान से ॥
दिलमें रखना प्रेम प्रीती एकताई देखना ॥ ६ ॥
बनज वह करना कि जिस में फायदा आए नज़र ॥
लेन में और देन में रखना सफ़ाई देखना ॥ ७ ॥
शास्त्र पूजा और सामायक सदा करना जरूर ॥
धर्म ही है जीव का हरदम सहाई देखना ॥ ८ ॥

अच्छा धर्म की जय बोलो और जहाज़ पर सवार हो जाओ ॥

(सबका धर्म की जय बोलना और सवार होना और जहाजका चला जाना)

सीन ९

(मैनागिर पहाड का परदा)

जहाजों का रास्ते में मैनागिर परवत पर पहोंचना--जहाजों से सबका उतर कर परवत की सैर करना--भविसदत्त का फूल तोड़ने जाना--बंधुदत्त के दिलमें शरारत आना और जहाजों को रवाना करना और भविसदत्त को अकेला छोड़ना--भविसदत्त का वापिस आना और जहाजों को न देखकर अफसोस करना--फिरते फिरते एक गुफा का नज़र आना भविसदत्त का उसमें प्रवेश करना ॥

(१) (भविसदत्त का गुस्सा करना) क्या मोहब्बत--प्यार-यारों में यारी--दोस्ती मरव्वत--भाइयों में वफादारी--आज सब एक दम दुनिया से जाती रही--क्या शरारत-मक्र--दग़ा--धोका--फ़ून--रिया--यकायक तमाम रूए-ज़मीन पर छा गई--क्या दया धर्म का ज़माना पलट गया--रहम व इंसाफ का तखता उलट गया--

(शेर)

आसमां चक्कर में आ एक दमसे तू फट जा ज़मीं ॥
कांप उठ परवत-रहा अब धर्म दुनिया में नहीं ॥ १ ॥
अय सितारो गिर पड़ो एक दम ज़मीं पर आनकर ॥
चल ध्रू शमशो क़मर--ता कांप उठे सारी ज़मीं ॥ २ ॥
अय फ़रिस्तो देवताओ इन्तज़ारी-किस लिये ॥
तह व बाला सारी दुनिया को करो हो खशमगीं ॥ ३ ॥

आग पानी और हवा मिट्टी छोड़ दो इत्तहाद ॥
फ़ायदा दुनिया से क्या जब धर्म दुनिया में नहीं ॥ ४ ॥

(२) (भविसदत्त का बधुदत्त की शिकायत करना)

अय बदकार बधुदत्त वादे शिकन–नापाक ख़ाक के पुतले किस मूंह से वफ़ादारी का इक़रार किया था–किस हौंसले पर भाई को अपने साथ लाया था–तूने सख्त धोका दिया–हिंदू जाती को बदनाम किया–वैश्य कुल को दाग़ लगाया ॥

(शेर)

नाग के मूंह में ज़हर था मुझे मालूम न था ॥
संग चक़मक़ में शरर था मुझे मालूम न था ॥
भाई होता है वफ़ादार सुना दुनिया में ॥
भाई के दिल में शर था मुझे मालूम न था ॥

अच्छा दग़ाबाज़ भाई जा–मगर याद रख जैसा तूने मुझको सुनसान बनमें हैरान किया है और मेरी उमीदों को ख़ाक में मिलाया है–उसी तरह तेरे उमीद के महल की भी दरो दीवार उदास होंगी–तबीयत मायूस होगी–यगाने बे आस होंगे–पापों की नहरें मुसीबत के दरिया में मिल जाएंगी–और तेरी उमीद की कश्ती होगी जो नाउमीदी व नाकामयाबी के भंवर में डिगमगाएगी–उस वक्त तेरी पथराई हुई आखें मेरी वफ़ादारी का हसरतनाक निज़ारा दिखाएगी–और यह आज की बदी याद रखना–नुक़सान और तकलीफ़ के फाटक पर तुझे खुशामदेद का झंडा हिलाएगी ॥

(३) (भविसदत्त का कुछ देर दिल में सोच कर खुद पशेमान होना)

अब ऐसे शिकवा शिकायत से क्या फ़ायदा—बहतर है गुस्से को दूर करूं—दिल को शान्त करूं—जो कुछ होता है अपने ही कर्मों से होता है—किसी को दोष देना फ़जूल है—दर असल यह मेरा ही तो क़सूर है—

(गाना) है खता मेरी दिला मैं ही खतावारों में हूं ॥
दोष किसको दीजिये मैं ही गुनहगारों में हूं ॥१॥
है बड़ा अफ़सोस जो माना नहीं मां का कहा ॥
अपनी जिदके कारणे मैं आज ग़मखुवारों में हूं ॥२॥
हा भविसदत्त क्यों गया था तोड़ने इस बन के फूल ॥
सख्त नादानी करी मैं खुद शरमसारों में हूं ॥३॥
क्या समझ कर आया था तू संग में बदकार के ॥
यूंही कहता था कि मैं दुनिया के हुशयारों में हूं ॥४॥
दोस्त दुशमन इस जगह कोई नज़र आता नहीं ॥
क्या करूं किससे कहूं मैं सख्त लाचारों में हूं ॥५॥
अब ज़मीं फटजा कि दुख मुझसे सहा जाता नहीं ॥
टूट कर गिरजा फ़लक मैं आज दुखियारों में हूं ॥६॥

(मूर्छा खाकर गिरना)

(४) (भविसदत्त का मूर्छा से उठ कर माता को याद करना)

हा माता—अब तू न मेरी सूरत देख सकती है—न मैं तेरी सेवा कर सकता हूं—न तू मेरा रोना सुन सकती है—न मैं तेरी धीर बंधा सकता हूं—बस अब उधर तुझको अपने सीने पर पत्थर धरना है-इधर मुझको इस पहाड़ के पत्थरों से सर टकरा कर मरना है ॥

(गाना- भैरवीं-हाय मैं अनाथ नाथ किससे जा कहूं) (टेक)
हाय क्या हुवा जुलम गजब सितम हुवा ॥
को सुने गिरयोजारी-लखे बेक़रारी ज़रा मेरी आके यहां ॥
किया मुझे यूं बे निशान-नहीं पाएगा कोई पता॥हाय०१॥
हाय मां मेरी प्यारी वह कर्मों की मारी-सुनेगी जो मेरी विथा ॥
किया वधू न तूने ध्यान-वह मर जाएगी बेगुमान॥हाय०२॥
नहीं मरने का ग़म मुझे अपना ज़रा-मुझे ग़म है कि अब मेरी मां
सितमगरा ओ बदगुमां-वह किसपे टिकाएगी जान॥हाय०३॥
मैं आया था कह करके माता से पूरा करूंगा मैं तेरा कहा ॥
हुवा असत बचन मेरा-यहां बेमोत आके मरा ॥ हाय० ४ ॥

(५) (भविसदत्त का कर्मों की शिकायत करना)

अय कर्म तू बड़ा पापी ज़ालिम है तुझको किसी भी
दुखिया बेकस पे रहम नहीं आता ॥ (गाना)
तूने माता को मेरी घरसे निकाला ज़ालिम ॥
पत्थरों में कहां लाके मुझे डाला ज़ालिम ॥ १ ॥
राज और पाट भी सब तूने छुड़ाया ज़ालिम ॥
हाय दोनों को मुसीबत में फंसाया ज़ालिम ॥ २ ॥
कौन अरमान था बाक़ी तेरे दिलमें ज़ालिम ॥
कौन से पाप का बदला यह निकाला ज़ालिम ॥ ३ ॥
खैर जो कुछ कि हुवा अच्छा हुवा लेकिन अब ॥
मेरी माता से तो इकबार मिला दे ज़ालिम ॥ ४ ॥

हाय बे रहम सितमगर तूने हमारे पिता के दिल को हमारी तरफ़ से हटाया-हमको ज़लील और बेतोक़ीर बनाया--

क्या यह क़ाफ़ी सज़ा न थी-जो तूने भाई को भी ऐसा सख्त दिल दुशमन बनाया ॥

(शेर)

चल दिया बनमें जो भाई को अकेला छोड़कर ॥
बात तक पूछी नहीं देखा नहीं मूंह मोड़ कर ॥ १ ॥
मेरा बिजली की तरह सीने में दिल बेचैन है ॥
देखले कम्बख्त तू सीने के परदे तोड़ कर ॥ २ ॥
हाय पापी कुछ नहीं दिल में किया तूने खयाल ॥
मां मेरी मर जाएगी दीवार से सर फोड़ कर ॥ ३ ॥

(६) (भविसदत्त को फिरते फिरते एक गुफा नजर आना और विचार करना) यह सामने गुफा नज़र आ रही है-भविसदत्त चल उधर चल-शायद कुछ बहतरी की सूरत मिले-कहीं ठिकाने पर पहोंचने का पता चले-(गुफा के करीब आकर) हा यह कैसी भयानक गुफा है अजदहा की तरह अपना मूंह फाड़े हुवे है-अगरचे मुमकिन है कि यह किसी तरफ़ को निकल जाने के लिये रास्ता हो-मगर इसमें क़दम रखना गोया मौत के मूंह में जाना है-शायद इसमें कोई शेर या ज़हरीले जानवर सांप बिच्छू हों-काश मैं इसमें प्रवेश करूं और अंदर ही मौत का लुकमा बनूं-दिल घबराता है हिम्मत का क़दम पीछे हटा जाता है (पीछे हटना)-(अग्र सोच कर) अय भविसदत्त परम धीर कमलश्री के बलबीर क्यों कायरता दिखाता है-किस लिये सम्यक्त और वैश्य कुल के

लाज लगाता है—जिनेन्द्र भगवान का ध्यान लगा—जिनवाणी पे निश्चय ला— (शैर)

फ़ायदा क्या इस प्रेशानी व हैरानी में है ॥
पेश आनी है वही जो कुछ कि पेशानी में है ॥

अपनी भुजाओं पर भरोसा कर—किसी बात से न डर ॥

(शैर)

कमर हिम्मत बांधले जो राज़ है खुल जाएगा ॥
खार भी होगा तो खुद इक बार गुल हो जाएगा ॥
हौसला कर ज़रा तू फ़िक्र को दिल से हटा करके ॥
न डर इतना गुफ़ा में चल क़दम हिम्मत बढ़ा करके ॥

इस गुफा के अंधेरे से क्या डरता है-क्यों कांपता है-बहादुर बन-आओ सम्यक दर्शन के सितारो मेरे हृदय में ज़रा प्रकाश करो-मिथ्यात और भ्रम के अंधेरे का एक दम नाश करो-अय भविसदत्त ज़रा आगे क़दम बढ़ा-बुज़दिली दूर कर--मरदानगी दिल में धर--तलवार हिम्मत हाथ में ले-- अपनी बहादुरी का इमतिहान दे ॥ (शैर)

अय भविसदत्त किस लिये डरता है तू इस ग़ार से ॥
तूतो अविनाशी है कट सकता नहीं तलवार से ॥१॥
तू नहीं ख़ाकी न बादी आतशी आबी नहीं ॥
जल पिघल सकता नहीं पानी आग की मार से ॥२॥
मौत गर आही गई कोई बचा सकता नहीं ॥
गर नहीं आई तो बे आई मरे नहीं मार से ॥३॥

सोच क्या करता है बस आगे बढ़ा अपना क़दम ॥
जो कुछ होना है सो होगा पार हो चल ग़ार से ॥४॥

(गुफा में प्रवेश करना)

सीन १०

(तिलकपुर पट्टन का परदा)

भविसदत्त का पहाड़की गुफासे बाहर निकलना—परदा फटना—तिलकपुर पट्टन शहर का नज़र आना और भविसदत्त का धनवाद गाना और ड्रोप सीन होना ॥

(चाल—नाटक—मेरे गम का तिराना सुनिये फिसाना)

तेरा धनवाद गाऊं—सर को झुकाऊं—अय मेरे भगवान ॥
तू हितकारी दुख पर हारी—सब सुखकारी—अय मेरे भगवान
तेरा० ॥ (टेक)
भाई मेरा अफ़सोस गया छोड़ के बन में बेक़रार ॥
धर्म ने मुझ को यहा पहुंचाया—गुफा से करके पार ॥
हा मेरी माता रोती है उसका—धीर बंधाना—
अय मेरे भगवान—तेरा० ॥

—:o:—

इति न्यामत सिंह रचित भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक पहला ऐक्ट समाप्तम् ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक।

दूसरा ऐक्ट

(१) भविसदत्त का तिलकपुर पट्टन को सुनसान देखकर हैरान होना और श्री जिनमंदिर जा में सामायक करके सो जाना॥

(२) इन्द्र का आना और तहरीर लिखकर चला जाना--भविसदत्त का तिलका सुन्दरी से मिलना--दाने से युद्ध करना और तिलका सुन्दरी से शादी करना और दोनों का घर चलने के लिये समंदर के किनारे पर आना॥

(३) चोरों का बधुदत्त के जहाज़ को लूटना--बधुदत्त का वापिस आकर भविसदत्त से मिलना॥

(४) भविसदत्त का तिलका सुन्दरी की नाग मुद्रिका लेने के लिये जाना-पीछे मे बधुदत्त का जहाज़ को रवाना कर देना और तिलका सुन्दरी के शील खंडन करने का इरादा करना--देवियों का सहायता करना और बधुदत्त को सज़ा देना॥

श्री जिनेन्द्राय नमः ।

सीन ११

(तिलक पुर पट्टन का परदा)

सूने शहर को देख कर भविसदत्त का अफसोस करना ।

यह कैसा खूबसूरत शहर बेमिसाल है-ज़रो जवाहरात से माला माल है-मगर अफ़सोस बिलकुल सुंसान है दिल परेशान अक्ल हैरान है ॥ (शैर)

मिठाई के चुने रक्खे कहीं थाल ।
कहीं ज़र बफ्त मखमल शाल दोशाल ॥
भरे रक्खे कहीं डब्बे रतन के ।
बने रक्खे हैं जेवर तन बदन के ॥
दुकाने सोने चांदी से भरी हैं ।
कहीं रक्खी मोतियों की लड़ी हैं ॥
मगर यह ख्वाब है या कुछ असर है ।
नज़र आता नहीं कोई बशर है ॥

जिन महलों में शमा काफ़ूरी रोशन थी-रात दिन रागो रंग होते थे-जहां लाखों आदमी अपनी सुखकी नींद सोते थे-वह आज सब बे चिराग हैं-मसान भूमी का नकशा दिखला रहे हैं-दुनिया की नापाएदारी को जितला रहे हैं ॥

(गाना-देश तीन ताल-नित फेरो माला हर की रे)

मत जानो दुनिया घर की रे ।

ना मेरी है ना तेरी है-दुनिया ना काहु बशर की रे ॥ टेक ॥
राजा राणा इंद्र सुरासुर हथियन के असवार रे ॥
सदा नहीं रहने का कोई छिन सुंगर संसार रे ॥ मत० १ ॥
झूंटे दल बल माल खजाने झूंटे सब परिवार रे ॥
मात पिता दारा सुत भाई झूंटा सब घरबार रे ॥ मत० २ ॥
दुख का सागर सुख की आगर देखो आंख पसार रे ॥
मोह के जाल फंसी सब दुनिया करती नांहि विचार रे ॥ मत० ३
सूने पड़े नगर हैं देखो महल मकान विचार रे ॥
कहां गए नगरी के राजा परजा बिलसन हार रे ॥ मत० ४ ॥

भविसदत्त ज़रा आगे चल शायद कोई आदमी नज़र पड़े-खाने पीने की सूरत बने ॥ (आगे जाना और भोजन व सामग्री को देखना) कैसे सुंदर नाना प्रकार के पकवान थालों में चुने रक्खे हैं-मगर अफ़सोस यहां भी कोई नज़र नहीं आता-तीन दिन से भूका हूं-प्राण निकले जाते हैं-प्यास से होंट सूखे जाते हैं-अगरचे भोजन की सब सामग्री मौजूद है मगर कोई देनेवाला नहीं-बिना दिये किसी चीज के लेने से चोरी का पाप लगता है-मेरी प्रतिज्ञा में भंग पड़ता है। चाहे प्राण जाएं या रहें-मैं हरगिज़ हरगिज़ अपनी प्रतिज्ञा न तोड़ूंगा-जब तक प्राण हैं धर्म से मूंह न मोड़ूंगा ॥

(दोहा)

धन दे तन को राखिये तन दे रखिये लाज ।
धन दे तन दे लाज दे एक धरम के काज ॥
बहतर है आगे चल ॥　　　(आगे जाना)

सीन १२

(श्री जैन मंदिर का परदा)

श्री जैन मंदिर का नज़र आना और भविसदत्त का सामायक करके सो जाना-इन्द्र का आना और भविसदत्त को सोया हुवा देखकर अफसोस करना और दीवार पर कुछ लिखकर चला जाना-भविसदत्त का बेदार होना-तहरीर पढ़ना और आगे जाना ॥

भवि० (श्री जैन मंदिर को नमस्कार करके) दो पहर हो गया-
सामायक का समय आ गया है-मुनासिब है कि
प्रथम श्री मंदिर जी में चलकर सामायक करूं-रंजो
ग़म को दिल से दूर करूं (शैर)

धर्म ही सार है जग में धरम दुख से बचाता है ।
बशर जो हो मुसीबत में उसे रस्ते लगाता है ॥

(मंदिर जी में जाना सामायक करना और सामायक के बाद विचार करना)

भविसदत्त तीन दिन से तूने न भोजन किया है न रातको सोया है दिल परेशान है होशो हवास काफ़ूर हैं-फिरते फिरते पाओं भी चकनाचूर हैं ॥ मगर इस क़दर हैरानी से क्या फ़ायदा-बहतर है कि सब रंजो मलाल दूर कर-दिल में धीर धर-मनको शांत कर । आख़िर इस मुसीबत का कहीं तो अंजाम होगा-इस हैरानी का कुछ तो परिणाम होगा ॥

(शैर) ऐसा दुनिया में कोई काम नहीं ।
एक दिन जिसका इख़्तताम नहीं ॥

बिगड़ना दिलमें घबराना नहीं है काम मर्दों का।
मुसीबत में धीर धरना यही है काम मर्दों का॥

अब धर्म पर भरोसा कर—और कुछ देर यहां लेटकर आराम कर॥

(शेर)

फिर जो कुछ होना है सो हो जाएगा।
जो लिखा तक़दीर में पेश आएगा॥ (सोजाना)

इंद्र (ऊपर से आकर) यह भविसदत्त मेरे पूर्व जनम का मित्र है—मैं इसकी मदद करने को स्वर्ग से आया—मगर अफ़सोस यह मुझको सोया हुवा पाया—न मैं ज़ियादा ठैर सकता हूं—और न इसको नींद से उठा सकता हूं॥

(शेर)

जीव के आराम में करना विघन एक पाप है॥
ख्वाब से बेदार करना इससे ज़ियादा पाप है॥

इस लिये इसकी बहतरी की तदबीर इस दीवार पर लिख जाता हूं—और यहां के मानभद्र को समझा जाता हूं॥

(इन्द्र का चला जाना)

भवि० (बेदार होकर और तहरीर को देख कर) हैं यह कैसी तहरीर है (तहरीर को पढ़कर) लिखा है कि (यहां से पांचवें घर में तुझको अपूर्व वस्तु का लाभ होगा) अक्ल हैरान दिल परेशान—यह मेरी बहतरी की तदबीर है—या मेरी फूटी तक़दीर की आख़री तहरीर है। ऐसा मालूम होता है कि कोई दुशमन मेरे मारने के लिये यहां आया मगर

मंदिर के स्थान में अपना मतलब पूरा न कर पाया- इस लिये अब यह जाल बनाया है-मुझे क़त्ल करने को पांचवें घर में बुलाया है। अगरचे वहां जाना अपने आपको मुसीबत में फंसाना है-मगर दिलमें डरना भी तो अपने धर्म और सम्यक्त में फ़र्क़ लाना है ॥ (शैर)

जिनको है सम्यक्त कुछ दिल में फ़रक़ लाते नहीं ।
आग से पानी से और खंजर से घबराते नहीं ॥ १ ॥
करम में और क्या लिक्खा है इसको आज़माऊंगा ।
आंख से देखकर दिलका शुबा अपना मिटाऊंगा ॥२॥
किसी दिन तो अपूरब बल था इन मेरी भुजाओं में ।
घटा है या बढ़ा है आज चलकर आज़माऊंगा ॥ ३ ॥
करम से आज सन्मुख हो लडूंगा खोल दिल अपना ।
नहीं कुछ रंजो ग़म मरने का अपने दिल में लाऊंगा ॥४॥

(चला जाना)

सीन १३
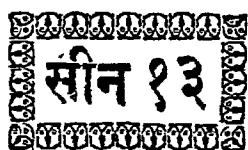
(तिलका सुन्दरी के महल का परदा)

भविसदत्त का तिलकासुन्दरी के महल में पहोंचना-तिलकासुन्दरी का सिंघासन पर बैठे हुवे हाथ में आइना लिये हुवे और शृंगार करते हुवे नज़र आना-भविसदत्त को देख कर तिलका सुन्दरी का शरमा कर नीची नज़र कर लेना और भविसदत्त का बात चीत करना ॥

भवि० हे चन्द्रमुखी सुन्दर राज कुमारी यह क्या-घर पर

आप की कुछ भी आव भगत न करना—बल्कि आंखें चुराना ॥ (तिलका सुन्दरी का चुप रहना) हे शुद्ध हृदय वाली—राज दुलारी मैं दुखिया मुसीबत का मारा—तीन दिन से इस मैनागिर पर्वत और इस तेरे सुनसान शहर में भूका प्यासा हैरान परीशान फिर रहा हूं ॥ आज शुभ के उदय से आपका पता मिला—आराम की आशा करके आपकी सेवा में हाज़िर हुवा हूं । आप दया करके अपना हाल बताएं और मुझ पर कृपा दृष्टि करें ॥ (तिलकासुन्दरी का फिर चुप रहना)

(शैर) मान की पुतली हो या शर्मों ह्या की पुतली ।
बे मरव्वत की ग़ज़ब जोरो जफ़ा की पुतली ॥
बोलना मूंह से नहीं आंखें चुरा कर बैठना ।
आपकी कुलकी पियारी खूब अच्छी रस्म है ॥

तमाम शहर सुनसान पड़ा है इस में एक आप ही नज़र आती हैं—आपही का सहारा समझ कर मैं आपके दरवाज़े पर आया हूं । जहां कुछ होता है वहां ही कोई आता है ॥

(शैर) हर कुजा चशमऐ ववद शीरीं ।
मरदुमो मुरग़ो मोर गिरदाएंद ॥

(दोहा) जहां सम्पति तहां पाहुनो जहां सावन तहां मेंह ।
जहां सासू तहां सासरो जहां जोवन तहां नेह ॥
बस्त्र बिभव विद्या वचन वपू सुंदर आकार ।
मालव जहां तहां जाइये जहां होय पंच मकार ॥

आव नहीं आदर नहीं और नैनों नहीं नेह।
मालव वहां न जाइये चाहे कंचन बरसो मेंह ॥

अय भविसदत्त जहां आदर और आव भगत तो दर-किनार—बल्कि बात का जवाब तक न मिले—वहां जाना अपना अपमान कराना है—बहतर है यहां से चलिये—किसी और जगंह जंगल या मकान में ठिकाना करिये—अच्छा राज दुलारी सुखी रहो—यदि कोई अनुचित बचन मेरे मूंह से निकला हो तो परदेशी समझकर क्षमा करना ॥ वापिस चलने को तय्यार होना।

तिल० (विचार करके कि घर पर आए की आव भगत न करना नीति के विरुद्ध है और उठकर)
आइये महाराज विराजिये—मैं आपकी सेवा करने को तय्यार हूं—मैं आपके चमकते हुवे चेहरे की तरफ़ देखने की ताब न लासकी दोनों आंखें शरमो हया से एक दम नीची हो गईं—इसमें मेरा और मेरे कुलका कोई दोष नहीं—आप नाराज़ न होवें—मैं आपसे क्षमा मांगती हूं—क्षमा करें ॥

भवि० (सिंघासन पर बैठ कर) हे चंद्र बदनी आपका क्या नाम है ॥

तिल० (एक कुरसी पर बैठ कर) हे राजकुमार मेरा नाम भौसान रूपा है और मुझको तिलका सुन्दरी भी कहते हैं ॥

भवि० आप कौन हैं ॥

तिल० महाराज अंबदत्त सेठ की रानी चन्द्र रेखा की लड़की

भवि० इस शहर का क्या नाम है ॥

तिल० तिलक पुर पट्टन ॥

भवि० यहां का राजा कौन है ॥

तिल० महाराजा जशोधर यहां राज करते थे ॥

भवि० आपके परिवार में कौन है और कहां है ॥

तिल० अब कोई भी नहीं है—सब परिवार मौत के हवाले हो गया—मैं ही एक कम्बख्त बची हूं—नाग श्री मेरी बड़ी बहन थी जिसकी शादी यहां के राजपुत्र से हुई थी—वह भी नहीं रही ॥

भवि० यह तमाम शहर किस तरह से विरान हो गया ॥

तिल० (आंखों में आंसू लाकर) (शेर)

मुझ से मत पूछो कि यह क्या हो गया ॥
जैसा कुछ होना था वैसा हो गया ॥
दिल भरा आता है मेरा दर्द से ॥
मूंह से कह सकती नहीं क्या हो गया ॥

भवि० (शेर) आखरिश क्यों कर हुआ किसने किया ॥
साफ़ बतलादो मुझे क्या हो गया ॥ १ ॥
धीर धर दिलमें ज़रा कायर न बन ॥
मत ख़याल उसका करो जो हो गया ॥ २ ॥
कर्म गत मेटी नहीं जाए कभी ॥
था यही तक़दीर में जो हो गया ॥ ३ ॥

तिल० हे राजकुमार अगरचे इस शहर का हाल बताते हुवे मेरा दिल भरा आता है—मगर आप जो इस बात पर इसरार करते हैं इसलिये मैं जरूर बतलाऊंगी—मगर पहले आप कृपा करके बतलाएं कि आप कौन हैं ॥

भवि० हे सुलोचने—मैं हस्तनाग पुर के महाराज धनवे सेठ की रानी कमलश्री का पुत्र हूं ॥

तिल० आपका इस क़दर दूर दराज सफ़र करके इस सूने शहर में कैसे आना हुवा ॥

भवि० (दोहा) कित माता कित मावसी कहां पिता कहां वीर ।
जूं जूं आ बिपता पड़े जूं जूं सहे शरीर ॥ १ ॥
जैसी तू दुखिया मिली वैसा जानो मोय
सुख दुख अपने कर्म के दोष न दीजे कोय ॥२॥
बिपत कथा मेरी बड़ी मोसे कही न जाय ।
कर्म यहां ले आईयो यूं समझो मन मांय ॥३॥

प्यारी मेरी बात को रहने दो—आप पहले ही दुखी हैं—आपको दुख में और दुख देना मैं मुनासिब नहीं समझता—फिर किसी मौक़े पर अपना हाल सुनाऊंगा—आप अपना हाल सुनाएं—शायद बहतरी की कोई सूरत निकल आए ॥

तिल० (रोकर हाल सुनाना) (गाना—देश)
तुम सुनो कंवर महाराज बिथा दर्शा दूंगी सारी ॥ टेक ॥
असन बेग एक दाना है बलवान अती भारी ॥
है पहले भव का दुश्मन इस नगरी का दुखकारी ॥ १ ॥

पकड़ पकड़ सब राजा परजा क्या नर क्या नारी ॥
एक दम ले जा गिरा दिया सागर के मंझधारी ॥२॥
एक मुझ दुखिया को राखा यां करमन की मारी ॥
रहूं अकेली नाथ रात दिन यह दुख है भारी ॥ ३ ॥
तुम स्वामी गुणवंत बड़े बलवंत कलाधारी ॥
मुझ दासी को संग ले चलो चरणन बलिहारी ॥ ४ ॥

भवि० (गाना-चाल क़वाली-कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारों पे हूं)

है मुझे अफ़सोस मैं यह काम कर सकता नहीं ॥
क्या करूं लाचार हूं मैं ऐसा कर सकता नहीं ॥ १ ॥
कैसी दुविधा में मुझे डाला है प्यारी आपने ॥
यूं भी कर सकता नहीं और यूं भी कर सकता नहीं ॥२॥
जो अगर मतलूब हो देने को मैं तय्यार हूं ॥
पर तुम्हें लेकर के जाऊं ऐसा कर सकता नहीं ॥ ३ ॥

तिल० (गाना-चाल क़वाली-मैं नहीं पहनूं पिया प्यारे पुरानी चूड़ियां)

बात आखिर क्या है जो तुम ऐसा कर सकते नहीं ॥
दोष क्या मेरे में है जो आप वर सकते नहीं ॥ १ ॥
क्या हमारे वंश में जाती में फ़र्क़ आया नज़र ॥
क्या शुबा अस्मत में है जो ऐसा कर सकते नहीं ॥२॥
एक दिन वह था कि थे लाखों हमारे मुन्तज़र ॥
हाए किसमत आज तुम कहते हो वर सकते नहीं ॥३॥

भवि० (शैर) कौन करता है शुबा प्यारी तेरे सत शील में ॥
तू सती है बेशुबा पक्की धरम में शील में ॥

बात दर असल यह है कि मैंने जैन धर्म के पंच अनु-

व्रत को धारण किया है—यानी हिंसा-झूट-चोरी-कुशील और परिग्रह ... त्याग किया है—इस लिये जब तक धर्म रीति से फेरे से आपकी शादी न हो—तब तक मैं आपको अपने संगमें नहीं लेजा सकता और अपने शील व्रत में दाग नहीं लगा सकता ॥ (शैर)

बराबर उम्र की छोटी बड़ी पर स्त्री सारी।
बहन माता सुता के तुल्य मैं सबको समझता हूं ॥

मैं आपकी खातिर मुशकिल से मुशकिल काम करने को तय्यार हूं—मगर धर्म के विरुद्ध करने से लाचार हूं ॥

तिल० बेशक धर्म के विरुद्ध करने को मैं भी तय्यार नहीं—मगर क्या शादी करना धर्म नहीं—अगर धर्म है तो फिर इंकार क्यों ॥

भवि० बेशक शादी करना धर्म है—मगर आप का कन्या दान कौन करेगा ?

तिल० क्या शास्त्र में गंधर्व व्याह करने की आज्ञा नहीं है ॥

भवि० हां है—मगर प्यारी मुझको चोरी का भी तो नेम है—चोरी का लक्षण है—"अदत्ता दानं स्तेयं" यानी विना दिये किसी चीज़ को लेना चोरी है—जब आपके देनेवाला कोई नहीं तो मैं आपको कैसे ले सकता हूं ॥

तिल० (अफ़सोस करके) (दोहा)

मात नहीं साजन नहीं दिन चिंता में जाय ॥
तारे गिन गिन काटती रैन अंधेरी हाय ॥

(गाना—मिश्रित भैरवीं—नाटक)

अकेली उठे कलेजे पीर—हमारी कौन बंधावे धीर ॥
सूनी नगरिया—बाली उमरिया—चले दुधारी कटार ॥
अकेली० ॥

भवि० (दोहा) विषय भोग संसार में दुखदाई सब जान ॥
संजम शील उर धारिये जबलग घट में प्राण ॥

(गाना—मिश्रित भैरवीं—नाटक)

पियारी तजो विषय की पीर—तुम्हारी धर्म बंधावे धीर ॥
झूटा झगड़िया—देश नगरिया—लखो तो नैन पसार ॥
पियारी० ॥

तिल० अय राजकुमार आप सच कहते हैं—मगर इस छोटी उमर में इतना दुख सहना और विषय भोगों को तज कर संसार में रहना कुछ आसान नहीं—ऐसे बहुत कम हैं जिनके दिल में दुनिया का अरमान न हो ॥

भवि० बेशक यह काम आसान नहीं मगर जो आदमी धर्म से गिरता है वह पशु समान है-इन्सान नहीं-अपने धर्म पर क़ाइम रहना इन्सान का काम है-मुसीबत में हिम्मत न हारना—मरदानगी इसी का नाम है ॥ (शेर)

सुख अगर किसमत में है तो सुख हमें मिल जाएगा ॥
दुख सदा रहता नहीं निश्चय करो टल जाएगा ॥

तिल० अच्छा मैं आप के कहने पे यक़ीन लाती हूं—सब रंजो ग़म दिल से हटाती हूं ॥ (शेर)

तुम्हीं ने दर्द दिया है तुम्हीं दवा देना ॥
मुझे हां ग़ैर के अहसान से बचा लेना ॥

भवि० अय बुलन्द मरतबा राज दुलारी मुझे जियादा शर्मसार न कर—दिलमें धीरज धर—धर्म पे भरोसा कर ॥

(दोहा)

आछे दिन पाछे गए आई दुख की रात ॥
समता धरकर काट दे मिले सुक्ख परभात ॥

दुनिया में जितने सुख दुख होते हैं वह सब अपने ही कर्मों का फल है—कर्मों के बिपाक यानी फलको कोई नहीं रोक सकता—बड़े बड़े नारायण प्रति नारायण भी इसके आगे लाचार हो जाते हैं—फिर रंज करना ला हासिल है ॥

(गाना--आसावरी -तीन ताल)

सती तू काहे भई दलगीर—सती तू० ॥ टेक ॥
कर्म बड़े बलवान जगत में, चाहे पटक मारें परबत में ॥
चाहे धरें सुरगत दुरगत में, चले न को तदबीर ॥ १ ॥
तिलक राम को दूं सब जन में, दशरथ ने धारी निज मनमें ॥
कर्म निकार दिये तिहुं बन में, सिया लखन रघुबीर ॥ २ ॥
आग लगी द्वारा मंझधारे, ताहे भुजावन हेत अपारे ॥
हरि बल दोऊ जतन कर हारे, कहीं मिलो नहीं नीर ॥ ३ ॥
क्या राजा क्या रंक विचारे, हरि हर ब्रह्मा छः खंड वारे ॥
क्या सुरासुर चराचर सारे, बंधे करम जंजीर ॥ ४ ॥

तिलका सुन्दर शोक निवारो, समता धरो करम को टारो ॥
सम्यक दर्शन हिरदय धारो, बनो वीर धर धीर ॥ ५ ॥

हे प्यारी अब अपने चित्त को शान्त करो—और यह बतलाओ कि क्या इस शहर में आपका कोई भी खबर गीरां नहीं है ॥

तिल० (शेर) खबर उजड़े नगर में कौन मेरी लेने वाला है ॥
मुसीबत में कौन किसको तसल्ली देने वाला है ॥
वही दाना मगर कुछ देर में अब आनेवाला है ॥
अगर वह आ गया तो बस समझ ले सबका गाला है ॥

अय राज कुमार जूं जूं उसके आने का वक्त नज़दीक आता जाता है—मेरा दिल कांपता है—बदन थर्राता है—बहतर है यहां से चले जाओ—किसी पहाड़ या जंगल में छुप जाओ और अपनी जान बचाओ ॥

भवि० तिलका सुन्दरी इतना न घबराओ—अगर वह दाना है—तो मैं भी नादान नहीं इनसान हूं ॥ (शेर)
दाने की क्या मजाल है इन्सान के आगे ॥
लोहा भी पिघल जाता है इन्सान के आगे ॥ १ ॥
हाथों में नहीं चूड़ियां जो आके फोड़ दे ॥
कुछ खेल तमाशा नहीं जो सर को तोड़ दे ॥ २ ॥
तू देख तो होता है क्या इक दिल को थाम ले ॥
घबरा न इस क़दर ज़रा हिम्मत से काम ले ॥ ३ ॥
दिखाने तेग़ के जोहर हैं क़िसमत आज़मानी है ॥
लड़ाई में हमें दाना से अपनी जां लड़ानी है ॥ ४ ॥

(तिलका सुन्दरी और भविसदत्त का मिल कर गाना—चाल—नाटक—
(गुलफ़ज़रीना)

तिल० मानो मानो ज़रा मोरा यह कहा, कलपा ना जिया,
जालिम बदज़न पत्थरका तन-है वह दाना भारी दुशमन॥
उससे लड़ना जाकर भिड़ना-नाहीं ज़ेबा ॥मानो२ टेक०
आ तुझको महलों में दूं मैं छुपा, मैं छुपा, मैं छुपा,
मैं छुपा, मैं छुपा ॥ अय गुणवान, अय बुधवान,
कहना मान, कहना मान, अय अंजान, अय नादान,
कहना मान ॥

भवि० राज कुमारी, राज दुलारी, यह हैरानी, परेशानी,
सरगरदानी, है दीवानी क्या ॥ तिल० मानो मानो०

भवि० (गाना—नाटक) देखो देखो अय प्यारी क्या डर है—
तुझे काहे का एता फ़िकर है ॥ ले धनुष बान जाऊंगा-
दाना को गिरा आऊंगा ॥ ग़म न कर—धीरज धर—
बस कहने पे निश्चय कर—दिल में न कोई ख़तर है ॥
तुझे काहे का एता फ़िकर है ॥ देखो देखो० ॥

(दाने का शोर करते हुवे आना और भविसदत्त का धनुष बान लेकर खड़ा होना और दाने का गुस्से से कहना)

दाना० अय नादान तू कौन है जो मेरे सामने धनुष बान लेकर आता है—अपने को मौत का निशाना बनाता है ॥ मैं ने इस नगर के बड़े बड़े बहादुरों को समंदर में गिराया—तमाम शहर मुल्के अदम को पहोंचाया—नहीं मालूम तू कहां बचा रह गया

था जो आज मेरे मुक़ाबले को तय्यार होता है—
नाहक़ अपनी जान खोता है ॥

सावि०(शेर)ओवे क़ातिल जाहिल दाना परवर होकर शर्म नहीं।
तुझको पापी कस नाकस पर कुछ भी आता तरस नहीं ॥
तूने इस नगरी को ज़ालिम क्यों नाहक़ बरबाद किया।
दया धरम को छोड़ा तूने ग़ज़ब किया बेदाद किया ॥

अफसोस तूने देवता के घमंड में आकर अपने बल का मान किया—मान में आकर नगर के लोगों का अपमान किया—सबको बेजान किया ॥ (शेर)

मान करना चाहिये हरगिज़ नहीं इन्सान को ॥
तीरको देखा है हमने सरके बल गिरता हुवा ॥१॥
मान सूरज करता है आकाश में चलते हुवे ॥
शाम को देखा उसी को सिर झुका ढलते हुवे ॥२॥
बात जो मानी नहीं रावण ने अपने मान से ॥
देखले मारा गया वह एक लखन के बान से ॥३॥
जब जरासिंध रायके कुछ मान दिलमें आ गया ॥
कर दिया श्रीकृष्ण ने एकदम में सर उसका जुदा ॥४॥
इसलिये तुमको न इतना मान करना चाहिये ॥
कुछ क्षमा का और दया का ध्यान करना चाहिये ॥५॥

अगर तुझको अपने बल का जियादा घमंड है तो मैदान में आ—मुआमला साफ़ कर—वरना मुझसे अपनी खताओं की मुआफ़ी मांग और मेरी आज्ञा को क़बूल कर ॥

दाना० (सोच कर) क्या कारण है जो मुझको इस शहज़ादे पर गुस्सा नहीं आता है (फिर दिलमें ज़रा सोचकर और अवध ज्ञान से विचार कर) हा—अवध ज्ञान से मालूम हो गया—यह तो वही भविसदत्त कुमार है जिसका हाल मुझको इन्द्र ने बताया था—अय राज कुमार बेशक मैं तेरे से नहीं लड़ सकता—तेरा मुक़ाबला नहीं कर सकता—तू पहले जनम का मेरा मित्र वफ़ादार है—इस लिये तुझको देखकर मेरा चित्त शान्त हुवा जाता है—तुझ से मुक़ाबला करना बेकार है ॥

भवि० हे यक्षराज मैं भी आपसे क्षमा मांगता हूं—अपनी सख्त कलामी की मुआफ़ी चाहता हूं ॥ आप मेरी बातों का दिल में कुछ ख़याल न लाएं—कृपा दृष्टि करके मुझको मुआफ़ फ़रमाएं ॥

दाना (शेर) ज़ुबां से मैं अदा अहसां तुम्हारा कर नहीं सकता।
तेरे कहने का मैं दिल में ख़याल अब कर नहीं सकता ॥

भवि० हे यक्षेन्द्र आपको अवध ज्ञान से पिछले जनम का सब हाल मालूम हो गया है मुझको भी उस हाल से आगाह करने की कृपा करें ॥

दाना (शेर) अय भविसदत्त हाल पिछले जन्मका सुन ध्यानकर।
मैं सुनाता हूं तुझे कुछ ज्ञान से पहिचान कर ॥ १ ॥
दुख नतीजा पाप का सुख फल धरम का देखले।
दुनिया जो कुछ है नतीजा है करम का देखले ॥ २ ॥

इसलिये हरएक को बदियों से बचना चाहिये ॥
हो सके इन्सान से तो नेक बनना चाहिये ॥३॥
मुनासिब है बशर कोई बशर के काम आजाए ॥
बदन धन मन किसी का बस किसी के काम आजाए ४
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात है ॥
जैसा करे वैसा मिले सौ बात की एक बात है ॥५॥

आपने और तिलकासुन्दरी ने पहले जनम में मुझ पर बड़ा भारी अहसान किया था इसलिये मैं दोनों की सेवा करने को तय्यार हूं ॥

भवि० और वह कौन था जो श्री मंदिर जी में दीवार पर तहरीर लिखकर गया था ॥

दाना वह पहले जनम का तुम्हारा मित्र था जो अब मर कर प्रथम स्वर्ग का इन्द्र हुवा है—वह ही तुम्हारे से श्री मंदिर जी में मिलने को आया था मगर आप को सोया हुवा देखकर एक दीवार पर तहरीर लिख कर वापिस चला गया—और मुझको आज्ञा कर गए कि इस राजदुलारी तिलकासुन्दरी की तुम्हारे से शादी करदूं—इसलिये अब मैं (तिलकासुन्दरी का हाथ पकड़ कर और भविष्यदत्त को कन्या दान करके) इस राजकुमारी की तुम्हारे साथ शादी करता हूं और यह तमाम शहर तुमको दान में नजर देता हूं—आप खुश से यहां रहें और आनंद करें—अगर कोई काम

पड़े तो मुझको याद कर लेना मैं हर वक्त आप की सेवा करने को तय्यार हूं ॥

परियां (ऊपर से आकर भविसदत्त और तिलकासुन्दरी की शादी की मुबारकबादी गाना ॥ चाल--कृष्ण प्यारे हां)

प्यारा प्यारी हां, प्यारी है न्यारी तोरी आन ॥
जोबन की क्यारी—क्या प्यारी—निराली हरयाली—
मदन की कान ॥ प्यारा प्यारी० ॥
तिलका सुन्दर भविसदत्त भोगी बिपत अपार ॥
धर्म न छोड़ा आपना धारा शील शृंगार ॥
दोनों मनके मोहनहार—सुख करतार-जाएं बलिहार-
होवे दूनी शान ॥ प्यारा० ॥

सीन १४

(जहाज़ का परदा)

(समंदर में चोरों का आना और बधुदत्त के जहाज़ों को लूटना और सब महाजनों का अफसोस करना)

आह चोरों को जत्थो आवत है सब होशियार होजाओ ॥
सब महाजन (रोते हुवे) हाए कौन मुसीबत आई कहां भागकर जाएं-बेमौत मरे कैसे प्राण बचाएं ॥

(सबका अफसोस करना) (गाना-चाल:—पनघट पर झांझरी मं [illegible]

हम सबपर पड़गई भीड़-हाए हम कहा करें दुख भागी जी टेक०
क्यों धनके लालच आए-हम तजकर घर सुतनारी जी ॥ १ ॥
को धीर बंधावे हमारी-हाए इस सागर के मंझधारी जी ॥ २ ॥

बधु० डरो मत घबराओ-मनमें धीरज लाओ-हाहाकार न मचाओ ॥

मल्लाह (चोरों को जहाज पर गिरते हुवे देख कर) सेठ जी चोर तो आगए ॥

सब महाजन (जोर से) हाए सेठ जी मर गए-

(चोरों का जहाजको लूटना और चला जाना)

मल्लाह गजब हो गयो-हाए दय्या कहा भयो-यो पापी बधुदत्त को माल भरो तोऊ हमरो प्रोहणयो लूटो ॥

सब महाजन (रोते हुवे गाना-चाल:-अपनी हमें भक्ती का कुछ दीजे दान)

कहा करें अब भाई सागर मंझधार ॥ टेक ॥
लुट गया माल धन सारा-है बधुदत्त हत्यारा ॥
करें हम किसपे पुकार ॥ कहा करें० ॥ १ ॥
कहां मात पिता सुत नारी-सब बिगड़ी दशा हमारी ॥
इस पापी के लार ॥ कहा करें० ॥ २ ॥
था भविसदत्त सुखकारी-दुखहारी पर उपकारी ॥
दिया पापी ने मार ॥ कहा करें० ॥ ३ ॥

सीन १५

(तिलका सुन्दरी के महल का परदा)

तिलका सुन्दरी का भविसदत्त से हाल पूछना-भविसदत्त का अपनी माता को याद करना और अपना हाल बताना-दोनों का हस्तनागपुर जाने का विचार करना और रवाना होना ॥

तिल० (चाल-इन्दर सभा-अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ)

अरज़ एक सुनिये मेरे ताजदार ॥
मेरे मन में चिन्ता है दीजे निवार ॥

भवि० कहो दिल में अरमान क्या रह गया ॥
मेरी प्यारी मुझको बताओ ज़रा ॥

तिल० चाल-उमराव थारी वाणी नीकी लागे महाराज)

महाराज मेटो मेरे मनकी चिन्ता महाराज-
महाराज जी-जी महाराज ॥ टेक ॥
कहां तुम्हारा राज है कौन मात परिवार ॥
कौन पिता किस वंश में लीना है अवतार ॥
महाराज हो तुम किस नगरी के वासी महाराज ॥
महाराज जी-जी महाराज ॥ महाराज मेटो० ॥१॥
क्योंकर छोड़ा राज को क्यों आए इस देश ॥
किस कारण घरबार को छोड़ चले परदेश ॥
महाराज क्योंकर हो गए बन के वासी महाराज ॥
महाराज जी-जी महाराज ॥ महाराज मेटो० ॥२॥
क्यों कर परबत चीर कर आए हमरे पास ॥
भेद बतादो बालमा सब संशय हो नाश ॥

महाराज मैं तेरे चरणन की दासी महाराज ॥
महाराज जी–जी महाराज ॥ महाराज मेरो० ॥३॥

मनि० (गाना--चाल:--सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे)
(अपनी माता को और पिछली बातों को याद करके और उदास होकर)

बताएं क्या तुम्हें प्यारी पता अपना निशां अपना ॥
बस अबतो है नहीं कोई निशां अपना मकां अपना ॥१॥
न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना ॥
बिगाने देश में प्यारी कौन है महरबां अपना ॥२॥
ज़मी बैरन मुख़ालिफ़ लोग दुशमन आसमा अपना ॥
ठिकाना अब कहो तुमही बतावें तो कहां अपना ॥३॥
सदा यूहीं बगूले की तरह फिरते हैं हम मारे ॥
नहीं मालूम क्यों बैरी हुवा सारा जहां अपना ॥४॥

तिल० हे प्राणनाथ आप की इस क़दर हैरानी व परेशानी का आख़िर क्या कारण है ॥ (शेर)

प्यारे क्यों यह हालते ज़ार है कैसा जीको तेरे मलाल है ॥
पिया साफ़ बतलादो हमें यह आप का क्या हाल है ॥
कहो कौन सोचो विचार है क्यों दिल आपका बेक़रार है ॥
नहीं दिलको मेरे क़रार है क्या बवाल है क्या ख़याल है ॥

मनि०(शेर) मेरे से कुछ नहीं पूछो मुझे क्यों बेक़रारी है ॥
तुम्हें बतला नहीं सकता कि क्या हालत हमारी है ॥

तिल०(शेर) तुम्हारी देखकर हालत मेरे दिल बेक़रारी है ॥
पिया सच हाल बतलादो कि क्या दिलमें बिचारी है ॥

अवि०(शैर) सुनेगी हाल गर मेरा मलिन होवेगा मन तेरा ॥
मुझे खामोश रहने दे इसी में कुछ भलाई है ॥
तिल०(शैर) मेरे तुम प्राण प्यारे हो छुपाओ भेद मत मुझसे ।
तुम्हें मेरी क़सम कहदो साफ़ जो दिलमें आई है ॥
बजा लाऊंगी सर आंखों से कह दो आप के मनकी ।
मैं सच कहती हूं मत समझो हंसी करने को आई है ॥
अवि० (शैर) सती सुन किस लिये तू दिलको यों बेज़ार करती है ।
सुनाऊं हाल गर तू इस क़दर इसरार करती है ॥

हस्तनाग पुर एक बहुत बड़ा मुकाम है—जहां मेरा पिता महाराज धनवे का धाम है ॥ सती महारानी कमलश्री मेरी माता है—सरूपा से मावसी का नाता है ॥ बधुदत्त मेरा सोतीला भाई है—उसी भाई के कारण मुझ पर यह मुसीबत आई है ॥ कर्म बड़े बलवान हैं जो चाहें सो करते हैं—इनही के बशमें सब इन्सानो हैवान मारे मारे फिरते हैं ॥ (गाना—चालः—चूंटी लाने का कैसा बहाना हुवा)

हाय कर्मों का ज़ाहिर में आना हुवा—
था यगाना मेरा सो बिगाना हुवा—हाय कर्मों का ॥ टेक ॥
पिता होके बिप्रीत—तजी माता से प्रीत ॥
करी ऐसी अनीत—करे कोई न मीत ॥
हाए माता को पीहर में जाना हुवा—हाय कर्मों का ॥ १ ॥
पिता करके अन्याय—लाए सरूपा को जाय ॥
हमें दिन वह दिखाय—कहा मुखसे न जाय ॥
उसका तीर एक दम बर निशाना हुवा ॥ हाय कर्मों का ॥२॥

मैं बधुदत्त के लार–चला करने व्योपार ॥
आया सागर के पार–यह दर्दी मनमें धार ॥
मुझको यहां छोड़ आगे रवाना हुवा–हाय कर्मों का ॥३॥
फिरा बन बन अधीर–फेर धर दिल में धीर ॥
मैना परवत को चीर–आया नगरी के तीर ॥
तेरे घर मेरा प्यारी ठिकाना हुवा–हाय कर्मों का ॥ ४ ॥
मेरी माता बरबाद–फिरती होगी नाशाद ॥
आ गई मुझको याद–करूं किस से फ़रयाद ॥
मेरा दिल हाय ग़मका निशाना हुवा–हाय कर्मों का ॥ ५ ॥
तिल० हे प्राण धार–आप ग़म न करें–धर्म पे भरोसा रक्खें ॥

(दोहा)

राज पाट धन सम्पदा चाहे सरबस जाय ॥
सतकी बांदी लक्षमी फेर मिलेगी आय ॥

यह तमाम शहर जरो जवाहर से माला माल है और आपको दान में मिल चुका है इस लिये आपका माल है–आओ यहां से धन दौलत लेकर अपने वतन को चलें और परिवार से मिलें ॥ (गाना–कान्हड़ा–चाल–जग झूठा मारा गोइया देख क्यों ललचाया)

मन धीरज धारो बालमा, देख क्यों घबरावो ॥ टेक ॥
मात तात सुत दारा भ्राता–सुख सम्पत मिल जावे ॥
हां मिलजावे मिल जा ॥ मन धीरज० ॥ १ ॥
एक धरम पर [illegible] रो–सब बिपता मिट जावे ॥
हां मिटजावे मिट जा ॥ मन धीरज० ॥ २ ॥

वस्त्रा भूषण रत्न जवाहर ले निज देश पधारो ॥
हां आओ जी आओ, मन धीरज० ॥ २ ॥

(दोनों का रवाना होना)

सीन १६
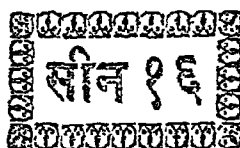
(समंदर के किनारे का परदा)

भविसदत्त और तिलका सुन्दरी का अपने घर जाने के लिये समंदर के किनारे पर आना और सब सामान जमा करना और जहाज की इंतजारी करना–जहाज का दिखाई देना–बंधुदत्त का आना–सब महाजनों और बंधुदत्त का अपना हाल भविसदत्त को सुनाना–भविसदत्त का दया करके कुछ माल उनको देना और सबका जहाज पर सवार होना और रवाना होना–तिलकासुन्दरी को अपनी नाग मुद्रिका याद आना–भविसदत्त का मुद्रिका लेने के लिये शहर में जाना और बंधुदत्त के दिल में बदी आना और भविसदत्त को छोड़ कर जहाज रवाना करना–तिलकासुन्दरी का विलाप करना ॥

तिल० (उंगली का इशारा करके) वह देखिये शायद कोई जहाज आता है ॥

भवि० हां बेशक जहाज आता है (सामान ठीक करना–जहाज का आना और सब महाजनों का जहाज से उतरना और अपना हाल सुनाना)

सब महाजन हे राजकुमार धन्य है–आज आपके दर्शन मिले–मानो हमारे मुरझाए हुवे हृदय के कंवल खिले–पापी बंधुदत्त आपको अकेला

छोड़ कर आगे गया—पाप कर्म से रास्ते में
चोरों ने सब धन माल लूट लिया (गाना—
चाल:—तूने फलक यह क्या किया)

हाए करम उलट गया हाए गज़ब सितम गज़ब ॥
धन माल सारा लुट गया हाय गज़ब सितम गज़ब ॥ टेक
तुमको अकेला छोड़कर पापी गया मुंह मोड़ कर ॥
जैसा किया वैसा मिला हाए गज़ब सितम गज़ब ॥१॥
अब कीजिये हम पर दया आके शरन तेरा लिया ॥
अब तेरे अख़तियार है हाए गज़ब सितम गज़ब ॥२॥

(पाओं में गिरना)

भवि० मेरे प्यारे महाजनों घबराओ नहीं—गए माल का
शोक न करो—दिलमें धीरज धरो—आपकी कृपा से
मेरे पास बहुत माल है—मैं अपने माल में से कुछ
आपको दे देता हूं—आपका टोटा पूरा कर देता हूं
(सबको माल तकसीम करना)

बधु० (जहाज़ से उतर कर और हाथ जोड़ कर) भाई मेरा अपराध
क्षमा करना—मैं ने जैसा किया वैसा पाया ॥

भवि० (बधुदत्त के सिर पर हाथ रख कर) (गाना—चाल:—मैं नहीं
पहनूं पिया प्यारे पुरानी चूड़ियां)
कौन कहता है बधुदत्त तू ख़तावारों में है ॥
तू तो सरदारों में है बल्के नेककारों में है ॥१॥
अय मेरी दाहनी भुजा हम सबमें तू गुणवान है ॥
कौन गुण तुझमें नहीं जो नेक अतवारों में है ॥२॥

मैं गुनहगारों में हूं सेवा न तेरी कर सका ॥
मैं बड़ा नादान हूं तू सबसे होशियारों में है ॥३॥
छोड़ तू जाता नहीं तो किस तरह पाता मैं धन ॥
तू मेरा हितकार है मेरे वफ़ादारों में है ॥४॥
भाई रंजो ग़म को दूर कर यह सब माल आप का ही है ॥

(शैर)

मेरे गुलशन का अगर कोई समर काम आए ॥
इससे बहतर ही है क्या आप के गर काम आए ॥
चलिये सब सामान जहाज़ पर रखिये और खुशी से घर को चलिये (सबका जहाज़ पर सामान रखना और जहाज़ पर सवार होना—तिलका सुन्दरी का भी जहाज़ पर सवार होना)

तिल० (अपनी उंगली में नागमुद्रिका न देख कर) हैं-मेरी मुद्रिका कहा गई ॥ (गाना—काफ़ी—चाल:—गगर सारी हार गयो मोपे रंगकी)

मुदरि हाए कांहिं गिरी मोरे अंग की ॥
कैसी बौरी भई, क्या दीवानी भई ॥
मै ने हारी किधर ॥ हाए कांहिं गिरी मोरे अंग की ॥
मुदरि हाए कांहिं गिरी मोरे अंग की ॥ टेक ॥
सेजों पे भूली हूं रंग महल में ॥
जाए कहां थी होगी वहीं ॥ हाए कांहिं गिरी मोरे अंग की
मुदरि हाए कांहिं गिरी मोरे अंग की ॥ १ ॥

भवि० (शैर) अंगूठी का प्यारी न कर ग़म ज़री ॥
मैं जाता हूं तिलका नगर में अभी ॥

अंगूठी अभी लेके आ जाऊंगा ॥
नहीं देर हरगिज़ ज़रा लाऊंगा ॥

(चला जाना)

वधु० (वधुदत्त के दिल में बदी आना और जहाज़ की रवानगी का हुक्म देना) खेवय्या—जल्दी बादबान उठाओ—फ़ौरन प्रोहण को चलाओ ॥

मंत्री० महाराज भविसदत्त सती तिलकासुन्दरी की मुद्रिका लेने गए हैं ऐसी जल्दी न कीजिये—ज़रा उनको आन दीजिये ॥

वधु० मंत्री यह ख़याल तुम्हारा ठीक नहीं है—हमने भविसदत्त के साथ बुरा सलूक किया है—अगर वह हस्तनागपुर पहोंच गया तो सब मुआमला खुल जाएगा और फिर हम सबको नुकसान उठाना पड़ेगा। इसलिये यह ही मुनासिब है कि भविसदत्त को यहां ही छोड़ चलें—जहाज़ फ़ौरन रवाना किये जावें—हरगिज़ देर न की जाए ॥

(जहाज़ का चलना)

तिल० (गाना—चाल:—बिंदी लेदे लेदे लेद मेरे माथे का सिंगार)
ज़रा ठैरो ठैरो ठैरो नहीं आए भरतार ॥
नहीं आए भरतार—मेरे जोबन के सिंगार ॥ टेक ॥
मत ज़ुल्म करे देवरिया मत सतियों से कर बिगार ॥
मत भाई को छोड़े परबत में पापी दुराचार ॥ १ ॥

कर जोड़ करूं अरदास ज़रा सुन मेरी तू पुकार ॥
मेरे बालम को आजाने दे इक दिलमें दया धार ॥१॥

वृषु० खेवय्या बस अब किसी की मत सुनो जहाज़ को चलने दो ॥

(जहाज़ का रवाना होना)

सीन १७
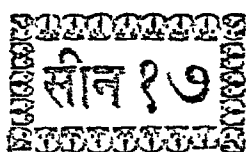
(जहाज़ में तिलकासुन्दरी के महल का परदा)

वृषुदत्त का तिलकासुन्दरी के पास आना और उसके शील भंग करने का मंशा करना--तिलकासुन्दरी का शील बचाना और ध्यान लगाना--जलदेवी और चक्रेश्वरी देवी का आना और वृषुदत्त का काला मुंह करना और उसको धमकाना और जहाज़ों को हिलाना--उसका तिलकासुन्दरी से क्षमा मांगना--तिलकासुन्दरी का देवी से कहकर उसको मुआफ़ करवाना और जहाज़ का रवाना होना ॥

तिल० हैं तुम कौन हो जो मेरे महल में आते हो ॥

वृषु० क्या तुम नहीं जानती—मैं तुम्हारा प्यारा हूं ॥

तिल० देवर वृषुदत्त

वृषु० हां

तिल० तुम यहां मुझको क्या समझ कर आए हो ॥

वृषु० अपनी प्राण प्यारी

तिल० हाए और मुसीबत आई

वधु० नहीं-पूं कहिये कि मुसीबत दूर हुई

तिल० मेरे प्यारे देवर-मैं खुद आफ़त में आई-कर्मोंकी सताई हूं-मुझे और न सताओ ॥

वधु० मैं तुम्हारी भोली भाली बातों में नहीं आ सकता-मेरा दिल तुम पर आगया-हटा नहीं सकता ॥

तिल० नाहक़ अपने आपको आफ़त में फंसाते हो-मेरे दुखते हुवे दिलको और दुखाते हो-जाने दो-नाहक़ दरिया में लहू की नदियां बह निकलेंगी ॥

वधु० अब कौन है जो मेरा मुक़ाबला करे ॥

तिल० मेरा सत शील मेरी सहायता करेगा और हस्तनागपुर का राजकुमार भविसदत्त तुम्हारा तनसे सर जुदा करेगा ॥

वधु० भविसदत्त अकेला पहाड़ों में सर टकरा कर मर जाएगा क्या वह दुबारा जिन्दा होकर मुझसे लड़ने आएगा ॥

तिल० (रोती हुई-गाना नाटक)

तू है बड़ा बदकार, रे तोहे नाहीं, शरम तोहे नाहीं शरम रे॥ टेक॥

भ्रात वधु मैं मात समाना ॥

तू मोहे समझे है नार, रे तोहे नाहीं, शरम तोहे नाहीं शरम रे १

रावण सिया लखी खोटी नज़र से ॥

हो गई लंक उजार, रे तोहे नाहीं, शरम तोहे नाहीं, शरम रे २

पाप बोल मत बोले रे पापी ॥

फटजागी धरती पहार, रे तोहे नाहीं, शरम तोहे नाहीं, शरम रे ३

सारे कर्मों में पाप बुरा है ॥
पापों में बुरी परनार, रे तोहे नाहीं, शरम तोहे नाहीं, शरम रे ४

बधु० जब तुम्हारा पति मर गया तो मुआमला दिगरगूं हो गया—अब रोना धोना फ़जूल है ॥ (शेर)

गया वक्त फिर हाथ आता नहीं ॥
बशर जो मरा लौट आता नहीं ॥

तिल०—(शेर) पती मेरा अरे बे मौत हरगिज़ मर नहीं सकता
जरूर आएगा लाखों में वह हरगिज़ टर नहीं सकता
तेरी बातों से मन मेरू हमारा हिल नहीं सकता ॥
जो निश्चय शील संजम हो गया सो टल नहीं सकता

बधु० (शेर) होना था सो हो गया जाने दो बस खैर ॥
रहो सहो खाओ पियो करो बाग़ की सैर ॥
बिछड़े सब कोई मिलत हैं जोबन मिले न जाय ॥
प्यारी जोबन खोय मत फिर पाछे पछताय ॥

तिल० (गाना) तुम्हें गुलशन की सूझे है यहां बेज़ार बैठी हूं ॥
न छेड़ो तुम मुझे जाओ कि मैं बीमार बैठी हूं ॥१॥
हंसी का है नहीं मौक़ा नहीं यह छेड़ अच्छी है ॥
करो मत दिल्लगी मुझसे कि मैं ग़मख्वार बैठी हूं॥२॥
अभी मर जाऊंगी गिर कर समंदर में देख लेना ॥
पिया के रंज में मरने को मैं तैयार बैठी हूं ॥३॥
अगर मैं आह मारूंगी लगेगी आग पानी में ॥
यह सब जल जाएगा टांडा जली अंगार बैठी हूं॥४॥

वधु० (शैर) न कर यूं रंजो गम प्यारी गई बातों को जाने दे।
पती के लौट आने की छोड़ दे आस जाने दे॥
तिल० (शेर) सता मत वे कसों को तू अरे बदकार जाने दे।
न धर सर पोट पापों की अरे बदकार जाने दे॥
तू भाई मेरे बालम का सो बेटे के बराबर है॥
न कर माता से यह बातें अरे बदकार जाने दे॥
वधु० (शेर) बाप है राजा मेरा है घर भरा जरो माल से॥
भोगती सुख क्यों नहीं कंबख्त मेरे माल का॥
तिल० (शैर) दोस्ती से जर की हो जाता है इन्सा रू सियाह॥
देख होता है सियाह दीवारो दर टकसाल का॥
वधु० अय प्यारी बार बार इंकार न कर— मेरे दिलको बेज़ार
न कर—रजामंदी का जवाब दे तकरार न कर॥
तिल० वही एक जवाब है जो सबमें नेक जवाब (गाना—कवित)
नार हूं पराई हूं, दुख दुख उठाई हूं॥
करमों की सताई हूं, दुख में हूं आपसे॥ १॥
मुसीबत में आई हूं, राजा की जाई हूं॥
सत गुण कहलाई हूं, बचती हूं पाप से॥ २॥
तेरे भाई की नार हूं, जी से बेज़ार हूं॥
सतियों में सार हूं, डरती हूं पाप से॥ ३॥
शीलका शृंगार हूं, शुभ गुण का हार हूं॥
असी की सी धार हूं, देख जो पाप से॥ ४॥
वधु० क्या मैं रूप में धन में विद्या में बल में भविसदत्त से
कम हूं जो तू मुझ से नफ़रत करती है॥

तिल० हैं-तू भविसदत्त का मुक़ाबला करता है-वह चमकता हुवा सूरज और तू टिमटिमाता हुवा चराग़ है ॥

(शैर)

विष हलाहल और है और सार अमृत और है ॥
तिमर मिथ्यात और है उद्योत सम्यक्त और है ॥
असलियत दोनों की हो जाएगी रोशन आपको ॥
चमक जुगनू और है प्रकाश दिनपति और है ॥

बधु० दुख पाएगी मरजाएगी आख़िर को पछताना होगा ॥

तिल० एक दिन है सबको मरना इस दुनिया से जाना होगा ॥

बधु० (तलवार दिखाकर) फिर वही इंकार शादी से उज़र है ॥

तिल० लीजिये यह सर आपकी नज़र है ॥

बधु० (हाथ पकड़ कर) यह तो सच है कि तुम मौत से नहीं डरती हो लेकिन मैं तुम्हें क़त्ल करने के लिये दिल किसका लाऊं ॥

तिल० (चीं बजबीं होकर और हाथ छुड़ाकर) बस मेरे तनको हाथ न लगाओ-वरना अभी अपघात करके मरजाऊंगी ॥

बधु० (शेर) समझ देखले प्यारी मनमें तू अपने ॥
मेरे हाथ से अब रिहाई न होगी ॥

तिल० (शैर) जो देगा अज़ीयत तो पाएगा ज़िल्लत ॥
बुराई में हरगिज़ भलाई न होगी ॥

बधु० (मिसरा) यह तो बतला फ़ायदा क्या ऐसी नादानी में है ॥

तिल० (मिसरा) पेशआनी है वही जो कुछ कि पेशानी में है ॥

वधु० (मिसरा) अरी क्यों हाथसे अपनी तू नाहक जान खोती है ।

तिल० (मिसरा) तो क्या चारा है मैं मजबूर हूं तकदीर सोती है ॥

वधु० (शैर) अय प्यारी जब मुसीबत जान पर तेरी बन आएगी ।
बतातो किस तरह तू अपनी फिर असमत बचाएगी ॥

तिल० (गाना-चाल:-कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली)

अरे पापी तू मुझको डराता है क्या ॥
मुझे मरने का कोई खतर ही नहीं ॥
कर न खोटी नजर इस बदी से गुजर ॥
बदी करने का अच्छा समर ही नहीं ॥ १ ॥
मैं सती हूं देख हाथ लाना नहीं ॥
ऐसी धमकी सती को दिखाना नहीं ॥
इस समंदर में आग न लगजा कहीं ॥
मेरे शील पे करना नजर ही नहीं ॥ २ ॥
आवें इन्द्र नरेंद्र जो मिलके सभी ॥
क्या मजाल जो शीलको मेरे हरें ॥
तेरी हस्ती है क्या पी मक्खि के सिवा ॥
मेरी नजरों में कोई बशर ही नहीं ॥ ३ ॥
चाहे भय भेद साम और दाम दिखा ॥
चाहे एक अनेक तू बात बना ॥
मेरे मनका सुमेरु हिलेगा नहीं ॥
मेरे मनमें किसी का भी डर ही नहीं ॥ ४ ॥

बघु० कमबख्त हट न कर इन्कार छोड़ ॥

तिल० बदबख्त जिद न कर तकरार छोड़ ॥

बघु० मान ले ॥

तिल० जान ले ॥

बघु० आसन तोड़ ॥

तिल० बदकारी छोड़ ॥

बघु० देखो प्यारी अब आखरी गुफ्तगू है जरा सोच समझ कर जवाब दो ॥

तिल० आखिर हो या शुरू—मैं ने तो पहलेही जवाब सोच रक्खा है ॥

बघु० तुमने क्या सोच रक्खा है ॥

तिल० मैं अपने शील पर प्राण दूंगी ॥

बघु० देखो तिलकासुन्दरी राज पाट में भंग पड़ जाएगा ॥

तिल० चाहे दुनिया में भंग पड़ जाए—लेकिन मैं अपने शील और इज्जत में भंग न पड़ने दूंगी ॥

बघु० अगर मैं तुम्हें जबरदस्ती राजी करलूं ॥

तिल० गो मैं औरत हूं मगर तुम जानते हो कि मैं सती हूं—मेरे खून और रग रग में जैन धर्म मौजूद है—यह खयाल दिलसे निकाल डालिये ॥

बघु० दुनिया में शील असमत कोई चीज़ नहीं—धर्म अधर्म सब बराबर हैं ॥

तिल० तुम्हारे लिये ॥

वधु० तो फिर तुम नहीं मानोगी—किसी तरह नहीं मानोगी

तिल० हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं ॥

वधु० फिर सोचलो—खूब सोच कर जवाब दो ॥

तिल० मैं सोच चुकी हूं—मुझे हरगिज़ मंज़ूर नहीं बार बार ऐसे सवालात करके मुझे न सताओ ॥

वधु० देखो सोचलो—फिर पछताओगी ॥

तिल० पछताए वह जो किसी पाप के बदले मरे ॥

(शैर) सर मेरा चाहो तो ले लो ज़रा इंकार नहीं ॥
धर्म के बदले में दुनिया की खरीदार नहीं ॥

शील पर जान दूंगी—स्वर्ग में जाऊंगी और सतियों में नाम पाऊंगी ॥

वधु० (ज़रा आगे बढ़ कर) तिलकासुन्दरी देखो मान जाओ

तिल० (हाथ से हटा कर) बस हटो—नाहक़ मुझे पापी न बनाओ—शरारत से बाज़ आओ ॥

वधु० मैं अभी मनालूंगा पकड़ कर ॥

तिल० मैं पहले ही मर जाऊंगी समंदर में पड़ कर ॥

वधु० (हाथ पकड़ कर) देखूं तू कहां तक अपना शील बचाएगी ॥

तिल० (घबरा कर कांपना और शील रक्षा के लिये प्राण त्याग करने का विचार करना और बेहोश होना)

(चाल नाटक—तुम जाओ ना ज़रा जाके सुजीवन लाओ ना)

हट जाइना—मेरे तनको हाथ बस लाए ना ॥

क्या ज़माने में कोई हितू ना रहा ॥ हट० ॥

(शैर) मैं न जानुंथी कि देवर मेरा दुशमन होगा ॥

हाथ पापी के मेरे शील का दामन होगा ॥

मत समझियो कि समंदर में मेरा कोई नहीं ॥

मुझे निश्चय है धरम मेरा मुआविन होगा ॥

बस सताए ना—दुख दिखाए ना ॥ मेरे तनको हाथ बस लाए ना ॥ १ ॥

(शैर) धर्म ने दीना सुदर्शन को सहारा देखो ॥

और श्रीपाल को सागर से निकारा देखो ॥

चीर द्रोपद का बढ़ाया था सभा में इकदम ॥

जल बना आग से सीता को उभारा देखो ॥

कलपाए ना—जी जलाए ना—मेरे तनको हाथ बस लाए ना ॥ २ ॥

(शैर) वहां पहाड़ों में तड़पता है अकेला बालम ॥

सास कमला मेरी रोती होगी निश दिन ज़ालिम ॥

आग भड़की चली आती है मेरे सीने में ॥

आह मारेगी मेरी तुझको भी एकदिन ज़ालिम ॥

तड़पाए ना—बस जलाए ना—मेरे तनको हाथ बस लाएना ॥ ३ ॥

(ज़मीन पर गिरना और बेहोश हो जाना)

(जल देवी और चक्रेश्वरी देवी का आना और वधुदत्त को धमकाना और जहाज़ों को हिलाना)

जलदेवी ठैर ठैर पापी क्या करता है (गाना—चाल बंजारा)

ओबे ग़ैरत पापी मूरत सती पे हाथ चलाता है ॥

यहसती सतोगुणी शील श्रोमणी खोफ़ जरा नहीं खाती है॥
तेरी सारी बदकारी का तुझको मज़ा चखावेंगी ॥
काला मूंह कर जावेंगी सागर में तुझे गिरावेंगी ॥
(काला मूंह करना और बांधना)

सब महाजन—(गाना—चाल—सखी सावन बहार आई झुलाए ..... जिसका जी चाहे)

सती हम सब दुखी होकर तुम्हारी शर्ण आते हैं ॥
कृपा कीजे दया कीजें अरज अपनी सुनाते हैं॥ १ ॥
वधु के साथ प्रोहण भी हमारे डूबे जाते हैं ॥
बिना कारण सती हम आज सारे मारे जाते हैं ॥ २ ॥
हुवा निश्चय कि है सांचा शील तेरा धरम तेरा ॥
हमें भी तो बचा लीजे चरण में सर झुकाते हैं ॥ ३ ॥

तिल० (देवियों से अरज करना) (गाना—चाल—मैं नहीं पहनूं पिया (..... प्यारे पुरानी चूड़ियां)

छोड़दो देवर को तुम कहने से मेरे छोड़दो ॥
बख्श दो इसकी खता देवी इसे अब छोड़ दो ॥ १ ॥
मेरा देवर है मेरे बालम का छोटा भाई है ॥
बस दया आती है मुझको छोड़दो तुम छोड़दो॥२॥
क्यों लगाती हो सियाही मेरे मूंह पे देवियों ॥
होना था सो हो चुका अब जानेदो बस छोड़दो॥३॥
जोड़ कर मैं हाथ तुम से अर्ज करती हूं यही ॥
सब महाजन छोड़दो इनके परोहण छोड़दो ॥४॥

जल देवी (जूती मार कर) (शेर)

अरे बदकार बेगैरत तेरी औक़ात पर लानत ॥
तेरी आदात पर लानत तेरी हरकात पर लानत ॥

चक्केश्वरी (जूती मारकर) (शैर)

कमीने बेहया कम अस्ल तेरी जात पर लानत ॥
तेरे मां बाप पर लानत तेरी इस बातपर लानत ॥

देख सती तुझपर फिर भी दया करती है-तू कमबख्त इसको बद नजर देखता है—जा हट हम सती के कहन से तुझको छोड़ते हैं ॥

(दोनो देवियों का गाना) (चाल · नाटक–पहले से दिलको संभाले हो प्यारी बहरे खुदा)

धीरज को दिलसे न हारिये हो प्यारी चिंता हटा ॥
जो दुख आएंगे–सगरे टर जाएंगे ॥
संजम ध्यान लगाइये हो प्यारी–चिंता हटा ॥
धीरज को दिलसे न हारिये हो प्यारी चिंता हटा ॥
कलमल हारी–सब हितकारी ॥
सत्य शील है सुख कारी ॥
तेरा शंकट दूर करेगा–मन शरधान लगाइये हो प्यारी–चिंता हटा–धीरज को दिलसे न हारिये हो प्यारी चिंता हटा ॥

(देवियों का चला जाना)

इति न्यामत सिंह रचित भविसदत्त तिलका सुन्दरी नाटक का दूसरा ऐक्ट समाप्तम् ॥

श्रीजिनेन्द्रायनमः

भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक।

तीसरा ऐक्ट

श्रीजिनेन्द्रायनमः

सीन १८

(हस्तनाग पुर में बघुदत्त के महल का परदा)

बघुदत्त का अपने घर पहोंचना और तिलकासुन्दरी से ब्याह करने की तय्यारी करना-तेल बान के दिन कुटम्ब की औरतों का आना और सबका बात चीत करना ॥

सस्रू० बेटा बघुदत्त यह जो तुम स्त्री लाए हो-यह रोती क्यों है ?

बघु० माता यह अपने घरको याद करती है

सस्रू० यह बोलती क्यों नहीं ?

बघु० यह आपकी बोली नहीं समझती ॥

सस्रू० जबसे आई है यह रो रही है-न खाना खाती न पानी पीती-आखिर इसका कारण क्या है ?

बघु० माता अभी छोटी उमर है-अपने मां बाप को याद करती है

(शैर) बहलते बहलते बहल जाएगी ॥
जो मन में शरम है निकल जाएगी ॥

सस्रू० बेटा यह किसकी लड़की है ?

बघु० माता यह रतन द्वीप के राजा की लड़की है तिलका सुन्दरी इसका नाम है ॥

सरू० तुमको यह लड़की किस तरह मिली ?

बघु० राजा ने मेरी चतुराई देखकर मुझको दी है ॥

सरू० पाणी ग्रहण (ब्याह) वहां क्यों नहीं हुवा ?

बघु० मुझे घर आने का जल्दी थी ॥

सरू० अब क्या करना है ?

बघु० बस जल्दी ब्याह की तय्यारी करो—जो नेग टेहला करना है करलो—दो चार दिन में इसकी भी शरम खुल जाएगी और अपने माता पिता को भूल जाएगी—जल्दी ब्याह हो जाएगा सब काम ठीक हो जाएगा ॥

सरू० अच्छा बेटा आज तेल बान का दिन है बस चौथे दिन ब्याह भी हो जाएगा ॥

कुटंब की एक स्त्री (तेलबान होते समय दूसरी स्त्री से तिलका-सुन्दरी के सिर की तरफ इशारा करके)

(दोहा) सखी देख या नारके, लगा सीस में तेल ॥
सो ऐसो होए नहीं, बिन साजन के मेल ॥

दूसरी स्त्री (दोहा) हाथों मेंहदी रचरही नैनों रंग बिशेष ॥
मिलसी भुगती बालमा यामें मीन न मेप॥

(दोनों का हंसना)

सरू० (लज्जित होकर) (दोहा)
सखियो है उस देश में, ऐसी ही कुछ रीत ॥
न्यारे न्यारे देश में, न्यारी न्यारी रीत ॥

(दोहा)

सब औरतें चलो सखी घर आपने यही जगतकी रीत ॥
हमें पराई क्या पड़ी रीत होय विपरीत ॥
(सबका जाना)

सीन १९

(समंदर के किनारे का परदा)

(भविसदत्त का अंगूठी लेकर वापिस आना-जहाज़ को न देखकर घबराना और विचार करना-मानभद्र का आना और विमाण में बिठला कर भविसदत्त को हस्तनागपुर की तरफ़ ले जाना ॥)

भवि० (घबराकर) हा बदकार बधुदत्त फिर धोका दिया (शेर)
नेक फिर नेक होते हैं बुराई हो नहीं सकती ॥
बदों से पर कभी हरगिज़ भलाई हो नहीं सकती ॥
भलाई करता जाता हूं बुराई होती जाती है ॥
इधर नेकी उधर से बेवफ़ाई होती जाती है ॥
बधुदत्त पहले तूने मुझको अकेला छोड़ा-भाई से मुंह मोड़ा-मैंने तुझको धन दौलत दिया-तेरा सनमान किया-क्या इसका यही बदला हो सकता है कि तू मुझको फिर पहाड़ों में छोड़कर चला गया-अफ़सोस सद अफ़सोस-(शेर)
समझता था कि अब देखूंगा कुछ आराम दुनिया का ॥
मगर अब होगया मालूम था झूठा गुमां अपना ॥

उधर तिलका तड़पती है इधर दिल मेरा व्याकुल है ॥
न जाने हाल क्या माताका होगा सख्त मुश्किल है ॥

(गाना-चाल-इन्द्रसभा)

जितनाजी चाहे तेरा और रुला ले मुझको ॥
जिसक़दर तुझको सताना है सताले मुझको ॥ १ ॥
संग दिल तुझसा करम और न होगा कोई ॥
सच बता तूने किया किसके हवाले मुझको ॥ २ ॥
मैं तो समझा था कि अब सुखमें गुजारूंगा दिन ॥
ढंग आते हैं नजर और निराले मुझको ॥ ३ ॥
बे तरह हाय तड़पती होगी तिलकासुन्दर ॥
मेरी मातासे तो इकबार मिलाले मुझको ॥

खैर भविसदत्त जो होता है अपने कर्मों का फल है-किसी को दोष देना लाहासिल है ॥ (शेर)

लिखा तक़दीर का मेटा किसी का मिट नहीं सकता ॥
जो कुछ होना है होता है हटाए हट नहीं सकता ॥

अब अपने मनको शान्त कर—जिनेन्द्र भगवान का ध्यान धर ॥ (गाना नाटक-गाफ करना)

जय रिषभेश्वर कृपा करो—दुख सागरसे पारकरो ॥ टेक ॥
हितकारी जिनराजतुही-दुखहारी महाराज तुही;
करुणाकर- जगदीश्वर-पातक दूर करो ॥ जय० ॥ १ ॥
तिलकासुन्दर सार सती-और मम माता कमलश्री ॥
परमातम-सुखदायक-दोउ मन धीर धरो ॥ जय० ॥ २ ॥

मानभद्र (ऊपर से आकर) अविसदत्त धीर धर गम न कर

मैं तुम्हारी सेवा करने को हाजिर हूं—तुम्हारी आहोज़ारी ने इन्द्र के आसन को हिलाया—इन्द्र ने मुझको तेरी मदद को यहां पठाया अब तू जो चाहता है सो कहो ॥ (शैर)

तू अगर चाहे तो तिलका से मिलादूं तुझको ॥
गर मिले मां से तो चल घर पे पहोंचा दूं तुझको ॥

भवि० हे यक्षेन्द्र मैं आपका और इन्द्र का निहायत ममनून हूं—कृपा करके मुझको हस्तनाग पुर अपने घर पहोंचा दीजिये ॥

मानभद्र आइये विमान तय्यार है—सवार हूजिये ॥

[भविसदत्त का सवार होना और विमानका उड़ना]

सीन २०
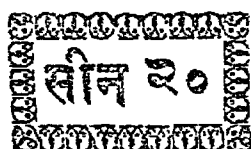
(कमलश्री के महल का परदा)

[कमलश्री का पुत्र की याद में अपनी सखी के सामने रोते हुवे नज़र आना—भविसदत्त का पहोंचना और मानभद्र को रवाना करना—और माता से बात चीत करना]

कम० [गाना नाटक—चालः—हो आंखे पिया मोरे गळे क्यों ना लांवदा पंजाबी—जंगला—ताल कहरवा]

सखीरी मेरा प्यारा कुमार नहीं आया ॥
कुमार नहीं आया—कुमार नहीं आया ॥ सखी० ॥ टेक ॥
दिलका सहारा आंखों का तारा ॥

सखीरी मेरा प्यारा—भविसदत्त प्यारा ॥ सखी० १ ॥
सब जन आए मन हरषाए ॥
सखीरी बधु आया—भविस नहीं आया ॥ सखी० २ ॥
ना जानूं किस देश मंझारा ॥
ना जानूं मेरा प्यारा—भंवर बिच डारा ॥ सखी० ३ ॥
सखी० (दोहा) कमलश्री धीरज धरो मन मत करो उदास ॥
निश्चय करके आएगा भविसदत्त सुत आस ॥
कही श्री मुनिराज ने आए आज तव नन्द ॥
झूंट बचन होने नहीं चाहे टरें रवि चन्द ॥
कम० [रोकर गाना—चाल—परदेशी सय्यां नेहा लगाए दुख देगयो]
माता को बेटा सागर में जाके दुख देगयो—सुख लेगयो ॥ टेक ॥
बालम नेहा बिसारी—सोतन के ताने भारी ॥
तूने ना पाती डारी—कैसी विपता में डारी ॥
दुख देगयो—सुख लेगयो ॥ माता को० ॥ १ ॥
मनको ठैराय राखो—अब लग समझाय राखो ॥
बनके बिरहन बिष चाखो—बनके बिरहन बिष चाखो ॥
अब क्या करूं—सखि क्या करूं ॥ माता को० ॥ २ ॥
सखि० [भविसदत्त के विमान का आना और प्रकाश होना]
कमलश्री देखो आकाश में कैसा प्रकाश नजर आ
रहा है ॥
कम० हां हां यह तो इधर को ही आ रहा है ॥
[विमान का नीचे उतरना]
सखि० [विमान से निकलकर और माता के चरणों में प्रणाम करके]

[दोहा] हे माता तुम देख कर मिला स्वर्ग का राज ॥
चर्ण स्पर्शे आपके जनम सुफल भयो आज ॥

कम० [भविसदत्त को छाती से लगाकर] बेटा तू सबसे पीछे कहां रह गया था—मुझे अपना सब हाल सुना—मेरे चित्त का संदेह मिटा ॥ [गाना चालः-पीहरवा उठी कलेजे पीर]

पियारा कहां लगाई देर—सितारा कहां लगाई देर ॥
नैनों का तारा—घर का उजारा—तड़पूं थी बाट निहार ॥
पियारा कहां लगाई देर—सितारा कहां लगाई देर ॥

(दोहा) तड़पूं थी तुझ दरस को, जैसे जल बिन मीन ॥
अब हृदय में कल पड़ी, सब कलमल भई छीन ॥

अरे लाला कहां लगाई देर—मैं वारी कहां लगाई देर ॥
प्राणों से प्यारा—मेरा सहारा—देखूं थी आंख पसार ॥
पियारा कहां लगाई देर—सितारा कहां लगाई देर ॥

भवि० माता क्या बधुदत्त आ गया ॥

कम० हां बेटा उसको आए कई दिन हुए ॥

भवि० अच्छा माता पहले यह बता कि तूने बधुदत्त की क्या क्या बातें सुनी हैं ॥

कम० बेटा सुना है बधुदत्त और सब महाजन बहुत सा धन कमाकर लाए हैं-बधुदत्त एक राजाकी लड़की भी लाया है-आज के चौथे दिन बधुदत्तका उस लड़की से ब्याह होगा-पर वह लड़की रात दिन रोती रहती है न जाने इसका कौन कारण है ॥

भवि० माता बधुदत्त बड़ा बदकार है-सुन मैं तुझे सारा हाल

सुनाऊं—आपसे विदा होकर हम सब मैनागिर परबत पर पहोंचे-बधुदत्त मुझे वहां अकेला छोड़कर आगे चलागया-मैं पहाड़ों में सर टकराता हुवा एक भयानक गुफाके रस्ते तिलकपुर पट्टन में जा निकला-वह नगर बिलकुल सुनसान था-आगे चलकर एक साहुकार की लड़की से मिलना हुवा-उसका नाम भौसानन्दा है और उसको तिलकासुन्दरी भी कहते हैं-मैंने असनवेग दानेको जीतकर उस लड़की को व्याहा बधुदत्त और सब महाजनों को रास्ते में चोरों ने लूट लिया-वे सब निर्धन होकर वापिस आए तो उसी मैनागिर परबत पर मेरेसे फिर मिलाप हुवा-मैंने उन की बिगड़ी हुई हालत पर रहम किया और बहुत सा माल उनको दिया और घर चलने का विचार किया-जिसवक्त हम जहाज पर सवार होगए-तिलकासुन्दरी को अपनी नागमुद्रिका याद आई-मैं अंगूठी लेने तिलकपुर पट्टन में गया-बधुदत्तने पीछे से जहाज चला दिया और मुझको फिर वहीं छोड़ दिया-आपकी कृपा से इन्द्रासन कांपा-उसने असनवेग दानेको मेरी मदद के लिये भेजा—जो आज मुझे बिमान में बिठलाकर आपके चरणों में लाया-मेरे पीछे रहने का यह कारण था जो आपको सुनाया ॥

स० हाए बेटा तूने परदेश में इतना दुःख उठाया—और पहाड़ों में अकेला रुलता फिरा—[illegible]

में प्रवेश किया—मैंने तुझे पहलेहीं बधुदत्त के साथ जाने से रोका था—तेरी दुख भरी वार्ता सुनकर मेरा हृदय कांपता है ॥

भवि० माता शोक करने की कोई बात नहीं जीवको अपने कर्मोंका फल अवश्य भोगना पड़ता है जैसा इन्सान करता है वैसाही फल उसको मिलता है—मैंने बधुदत्त के साथ कोई बुराई नहीं की—बल्कि उसकी हरवक्त मदद की—उसने मेरे साथ जो कुछ बुराई की उसका वह जिम्मेवार है ॥

[शैर] करमों का लेखा साफ है जैसा करे वेसा मिले ॥
दुनिया में सौदा नक्द है इस हाथ दे उस हाथ ले॥
सदा दिन किसी के यकसां नहीं रहते—अब आप धीरज धरें मनको शान्त करें ॥ [दोहा]
अशुभ करम जाता रहा बीत गई दुख रात ॥
अब आया शुभका उदय आई सुख प्रभात ॥

कम० बेटा वह तिलकासुन्दरी कहां है—उसे कहां छोड़ आया ॥

भवि० माता कहां बताऊं-कहीं छोड़ी हो तो बताऊं ॥

कम० आखिर कहां है-क्या हुवा ?

भवि० कुछ कहनेकीबात होतोबताऊं-कुछ हुवा होतो सुनाऊं
(शैर) है कहांपर वह सती तुझको बता सकता नहीं॥
क्या हुवा क्योंकर हुवा कुछ भी सुना सकता नहीं ॥

कम० बेटा जल्दी बता वह सुन्दरी कहां है-तेरे घबराए हुये वचन सुनकर दिल बेताब हुवा जाता है-धीरज छूटा जाता है ॥

भवि० माता यह बधुदत्त बड़ा मक्कार धोकेबाज़ दग़ाबाज़ जालसाज़ है-यह ही तो तिलकासुन्दरी है जिसके साथ बधुदत्त शादी करना चाहता है और अपने मुंह पर सियाही लगाता है ॥

क.म० हायरे बधु-ऐसा पापी-तिलकासुन्दरी तेरे बड़े भाई की बहू तेरी माता के सामान और तू उसको ब्याहे-क्या धर्म दुनिया से जाता रहा-क्या अभी प्रलय आगई-हाय तूने रही सही सारी खोई-कुलकी लाज डबोई ॥

भवि० माता घबरा नहीं ज़रा ठेर जा-सब काम ठीक हो जाएगा-किसी के बुरा करने से कुछ नहीं होता-अब तू एक काम कर (वस्त्रा भूषण देकर) यह ले तिलकपुर पट्टन के वस्त्र और आभूषण-कल प्रातः काल इनको पहन कर और शृंगार बनाकर तू बधुदत्त के घर जा और तिलकासुन्दरी से मिल और उसको यह (उंगली में अंगूठी पहना कर) नाग-मुद्रिका दिखला ताके उसको तसल्ली हो जाए-मगर देखियो मेरे आने की खबर सिवाय तिलकासुन्दरी के और किसी को न होने पाए-उस से भी इशारों में बात चीत करियो-ज़ुबान से कुछ न कहियो ॥

कम० अच्छा बेटा—ऐसा ही करूंगी—अब बहुत रात हो गई
है तू प्रदेश से थका मांदा आया है—ज़रा आराम कर॥

(दोनों का चला जाना)

सीन २१
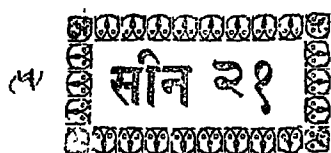
(सरूपा के महल के रास्ते का परदा)

कमलश्री का सरूपा के महल की तरफ़ जाना—रास्ते में धनवे सेठ का कमलश्री के शृंगार को देखकर मोहित होना और कमलश्री से बात चीत करना ॥

(शैर)

धन० बनी सत धर्म की पुतली बदन सांचे में है ढाला ॥
गले मोतियन की है माला कि है तारोंका उजियाला ॥
तेरा शृंगार प्यारी सारी नगरी से निराला है ॥
तुम्हारी छब निराली है तेरा जोबन है मतवाला ॥

कम० सरूपा तेरी प्यारी है तू उसका चाहने वाला ॥
मेरी तक़दीर साती है कौन है चाहने वाला ॥
तुम्हें ग़ैरों से उल्फ़त थी मेरी सूरत से नफ़रत थी ॥
आज किस मुंहसे मेरा बन गया है चाहने वाला ॥

धन० तेरी मन मोहनी सूरत तेरी बांकी अदा प्यारी ॥
खड़ा हूं इंतज़ारी में तेरा दीदार देखेंगे ॥

कम० अगर बांकी अदा होती मेरा अपमान क्यों होता ॥
निभाएंगे कहां तक ग़ैर अच्छा हम भी देखेंगे ॥

धन० (दोहा) गज गामिनी मृग लोचनी काम लता गुणधाम
चन्दन चौकी लीजिये करो नेक विसराम ॥
(चौकी देना)
तन मन धन घर सम्पदा डारूं तुम पर वार ॥
नेक प्रेम कर देखिये दीजे रोस निवार ॥

कम० (दोहा) चौकी उनको दीजिये जा पर तुमरी मेर ॥
हम विरहन पीहर वसें करें सदा दिन टेर ॥ १ ॥
टूटा दर्पण ना मिले मिले न टूटा मन ॥
आग लगे तेरे महल को जरो तिहारो धन ॥ २ ॥
मान घटे आदर घटे जहां न अपना सीर ॥
मालव वहां न वैठिये चाहे कंचन वरसो नीर ॥
(चौकी के ठोकर मारकर गरजना)

धन० (हाथ पकड़ कर) हे प्राण प्यारी अब मेरी खता मुआफ़ करो–अपने हृदय में ज़रा प्रेम का भाव धरो ॥

कम० (गाना–चाल नाटक–काहे छेड़ रहे हो सांवरिया)
काहे हाथ गहो हो साजनवा–जावो वहां ही–
जहां है म्हारी सोतनवा ॥ काहे० ॥

(दोहा) विन कारण अपमान कर दीनो हमें दुहाग ॥
लाए सल्पा व्याह के धर कर मन में राग ॥ १ ॥
संग कंच मोती रतन चीनी और मन क्षीर ॥
सातों टूटे ना मिलें करो लाख तदवीर ॥ २ ॥
छांड़ो हाथ हमारो साजनवा–सारो हमारो–
विरह में खोयो जोवनवा ॥ काहे० ॥
(हाथ छुड़ा कर चला जाना)

सीन २२
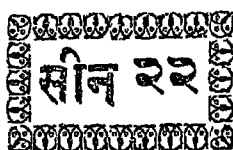
(सरूपा के महल का परदा)

कमलश्री का सरूपा के पास पहोंचना—आपस में बात चीत करना—तिलकासुन्दरी से मिलना और इशारों में बात करना और नागमुद्रिका दिखलाना ॥

सरू० आओ बहन कमलश्री—राजी तो हो ॥

कम० हां बहन सरूपा—जो दिन गुजरें सो अच्छे हैं—बहन तू तो अच्छी है ॥

सरू० हां बहन आपकी कृपा है—धन्य है आज तुमने दर्शन तो दिये—तुम्हारा तो मिलना ही दुर्लभ होगया ॥

कम० बहन कहां मिलना हो-आठ पहर घरमें पड़ा रहना न कहीं आना न कहीं जाना-आज तुमने बुलाया तो मिलना हो गया ॥

सरू० बहन यह तिलकासुन्दरी एक राजा की लड़की है—जो बधुदत्त रतनद्वीप से लाया है-परसों इसका ब्याह है--पर यह तो किसी से न बोलती है न चालती--न खाना खाती न पानी पीती--रात दिन मैले भेस, बिखरे केश रोती रहती है ॥

कम० (तिलकासुन्दरी से) क्यों बहू क्या बात है ॥

तिल० कमलश्री को अपनी असली सास समझ कर और उसको प्रणाम

करके) माता कुछ नहीं जगत को लीला देख रही हूं और अपने कर्मों को रो रही हूं ॥

कम० बेटी इतना रंज न करो-जरा मनमें धीर धरो धीरे धीरे सब काम ठीक हो जाएगा (इशारा करके) अबतो तुम्हारे शुभ का उदय आ गया है ॥

तिल० (इशारा करके) आगया ?

कम० हां बेटी आ गया (उंगली में नाग मुद्रिका दिखाकर) देखो यह राजमहल है-तुम्हारे घरमें अब किस बात की कमी है ॥

तिल० (इशारा करके) अच्छा सासजी आपको मुबारक हो-आपके होते मुझे काहेका फिक्र है-मेरा सरताज पुन्यका सूर्य घरमें आगया अब काहे की कमी है ॥

सरू० बहन कमलश्री धन्य है आपका आना-आज यह बोली तो सही-इसको यहां आए इतने दिन हुवे-बोलना तो दरकिनार-आंख उठाकर भी नहीं देखा॥

कम० बहन यह अभी बच्चा है-धीरे धीरे सब बोलने लगेगी--ऐसी जल्दी ही क्या है-दो चार दिनमें इसका दिलबहल जाएगा-कुछ का कुछ गुल खिल जाएगा॥ (मिसरा) आगे आगे देख तो होता है क्या ॥

(तिलकासुन्दरी का गुल खिल जानेका शब्द सुनकर हंसना)

सरू० बहन तुम हर रोज एकबार आजाया करो-तुम्हारे कारण बहु का दिल लगा रहेगा ॥

कम० अच्छा बहन अबतो मैं जाती हूं बहन देर हो गई ॥

(चला जाना)

सीन २३

(राजा के दरबारका परदा)

भविसदत्तका राजाके दरवार में जाना और बधुदत्त की वदकारी का हाल सुनाना–राजाका नाराज होना और सबको दरवार में तलब करना और सबका बयान लेना–सरूपा और बधुदत्ताको मुजरिम क़रार देना और भविसदत्त से खुश होना और अपनी वेटी सुमता का भविसदत्त से व्याह करना ॥

भवि० (राजाको प्रणाम करके और रतनोंका थाल आगे रखके) महाराज को प्रणाम ॥

राजा० आइये कुमार भविसदत्त (पान वीड़ा देकर) कंवरजी अच्छी तरह हो ॥

भवि० महाराज की कृपा से सब तरह आनन्द है ॥

राजा० कहो कंवरजी आज कैसे दर्बार में आना हुवा ॥

भवि० (हाथ जोड़कर) महाराज के हजूर में आज कुछ अर्ज़ करने को आया हूं–यदि आज्ञा होतो अर्ज़ करूं ॥

राजा० हां आज्ञा है–कहिये क्या बात है ॥

भवि० महाराज आपके नगरमें एक बहुत बड़ा अन्याय हुवा है आप मध्यस्थ होकर उसका न्याय फरमावें जो सच्चा हो उसका सन्मान करें और जो झूठा हो उसको दंड दें ॥

राजा० अवश्य ऐसाही होगा (गुस्से में) हा-मेरी नगरी में

और अन्याय-किसने क्या अन्याय किया है-कहिये॥

भवि० हे महाराज-इस नगर में श्रीधनवे सेठ का जो मधुदत्त पुत्र है-वह प्रदेश में व्योपार करने को गया था-बहुत सा धन और एक कन्या अपने साथ लाया है-उसे बुलाकर पूछा जाए कि किस देश में और किस व्योपार में उसने रुपया कमाया और किस तरह बिना व्याहे उस कन्या को लाया॥

राजा (दूतसे) जाओ फौरन-धनवे सेठ-मधुदत्त और सब महाजनों को जो मधुदत्त के साथ प्रदेश गए थे-हाजिर दरबार करो॥ (दूत का चला जाना)

दूत० (वापिस आकर) महाराज धनवे सेठ कहता है कि उसने दरबार से एक महीने की आज्ञा ली है-मधुदत्त का व्याह करके फिर दरबार में आएगा॥

भवि० महाराज जब तक न्याय न हो जाए तब तक उस लड़की का व्याह न होने पाए॥

राजा (कोतवाल से) जाओ सबको फौरन हाजिर दरबार करो-और शहर के पंचों को भी हमारा सलाम दो॥

भवि० महाराज जब तक सबका बयान लिया जाए मुझे पास के दूसरे कमरे में छुपने की आज्ञा दीजाए॥

राजा हां आज्ञा है॥ (भविष्यदत्त का छुप जाना)

कोतवाल महाराज सब हाजिर हैं॥

राजा देखो मधुदत्त हमको शुबा है-साफ साफ बतलाओ

तुमने यह धन प्रदेश में किस तरह कमाया है और बिना ब्याहे उस कन्या को जिसके साथ तुम अब शादी करना चाहते हो किस तरह लाए हो ॥

बधु० महाराज हमने अपना माल रतनद्वीप में बेचा और बहुत सा धन कमाया–और यह कन्या रतनद्वीप से लाया हूं–घर आने की जल्दी थी इस कारण वहां शादी न कर सका–हमारी लक्ष्मी को देखकर और जल कर किसी ने हुजूर से शिकायत की है–हुजूर तहक़ीक़ात कर लीजिये–जो झूटा हो उसको दंड दीजिये ॥

नोट–भविसदत्त का सामने आना–भविसदत्त को देखकर बधुदत्त और सब महाजनों का कांपना और सबका मूंह नीचा होना ॥

राजा० क्या बात है जो तुम सब के सब कांपते हो और तुम्हारी ज़ुबान बंद है–मालूम होता है–तुमने प्रदेश में ज़रूर कोई बदकारी की है–बहतर है साफ़ साफ़ बयान करो किसी से न डरो–वरना सबको सख्त दंड दिया जाएगा ॥

एक मारवाड़ी महाजन म्हाराज म्हे तो शाप शाप कहुंला–म्हारे कांई बातरो डर तो छै नाहीं–सांच बोलवा में डरको के काम–म्हे सारा सागे मैनागिर पर पहोंचिया वठे फूल तोड़वा सहजना गया छा–एं बधुदत्तरे पेटरी बात कुण जाने–या पापी ने म्हारे वास्ते तो बुला लियो और प्रोहण चला दियो–भविसदत्त लाई वठे एकलो

जंगल मांही छोड़ दियो-आगे म्हारे सारो माल चोरां लूट लियो-पाछे नसकोन सह कर म्हे उलटे पाछे-जीको वठे मैनागिर पर भविषदत्त मिल गयो-म्हे लोगांनूं धीरज बंधायो और म्हांको बहुत सो माल दियो-पाछे लाई (बिचारा) भविसदत्त तो अपनी बहुरी अंगूठी लेवां गयो-अठे बधुदत्त रे मन मांई फेर पाप जागियो-प्रोहण चलादियो और वेकी बहू भी सागे ले आयो-म्हे तो घणोई रोलो मचायो-रे पापी कदैनगे बेड़ो पार उतरसी-पण या पापी ने कोनी मानी-यो बधुदत्त पाप आतमा छै-म्हे तो सागे रहकर सारी बात आछी तरां देख लीनी-योतो दंड देवारो जोग छै-आगे सरकार री मरजी-पर दूध रो दूध पाणी रो पाणी न्याओ करणो चहिये जी ॥

दूसरा पंजाबी महाजन हां हजूर जो कुछ सेठ जी आख्या है-ए सब सच है-इसनु सजा दित्ती चहिये ॥

तीसरा महाजन सरकार सेठ जी ने जो कुछ बयान किया है-सब सच है-बधुदत्त काबिले सजा है-तिलकासुन्दरी भविसदत्त की व्याहता राणी है-रास्ते में बधुदत्त ने सती का शील डिगाना चाहा-सत के प्रभाव से जल-देवियां आगई-बधुदत्त का काला मुंह किया और सब जहाज डूबने को तय्यार हो गए-हम सबने सती से वीनति करी-सती ने हम सबको बचाया-वरना सभी समन्दर में खेत रहते ॥

राजा अय शहर के पंच साहेबान--आपने सब मुआमले को सुन लिया है--इसमें आपकी क्या राय है--हमारी राय में बधुदत्त को सज़ा दी जाय--भविसदत्त का सन्मान किया जाए--धनवे सेठ को सेठ की पदवी से हटाया जाए॥

पंच महाराज बेशक बधुदत्त दंड के योग्य है मगर इसने जो बदकारी की है वह अपनी माता की सलाह से की है इस लिये उसको भी दंड देना चाहिये--इसमें धनवे सेठ का कोई अपराध नहीं मालूम होता--इसको सेठ पदवी से हमारी राय में नहीं हटाना चाहिये--मगर सेठ जी ने जो कमलश्री अपनी सेठानी को पीहर में निकाल रक्खा है यह अयोग्य और धर्म विरुद्ध बात है इस बात का ज़रूर फैसला होना चाहिये--तिलकासुन्दरी सती है और भविसदत्त की ब्याहता स्त्री है यह भविसदत्त को मिलनी चाहिये--भविसदत्त बेशक धर्मात्मा है इसको सेठ की पदवी दी जाए॥

राजा मंत्री साहेब सरूपा को भी दर्बार में बुलाया जाए और दूतियों के द्वारा तिलकासुन्दरी के शील की भी परीक्षा की जाए॥

मंत्री महाराज सरूपा हाज़िर है (सरूपा का आना)

चंद्ररेखा व लच्छी दूतियां (दरबार में आकर)
महाराज हमने तिलकासुन्दरी के शील की खूब परीक्षा की--वह हर तरह अपने शील पर क़ायम है और भविसदत्त को ही हरदम याद करती है॥

(शेर) वह है पूरी सती इसमें शुबा कुछ हो नहीं सकता ॥
डिगाए शील उसका कोई ऐसा हो नहीं सकता ॥

राजा (राजा का तिलकासुन्दरी को दरबार मे आते हुए देख कर सन्मान करना और दूसरे सिंघासन पर बिठाना) आओ बेटी सिंघासन पर विराजिये ॥

(तिलकासुन्दरी का बैठ जाना)

तिल० हे राजन मेरे धर्म पिता—मैंने चन्द्रलेखा व कन्की की जुबानी सुना है कि आज आप ने भरे दरबार वधुदत्त के मुआमले का फैसला किया है—और मुझको वधुदत्त पापी के हवाले किया है—अगर यह सच है तो मालूम होता है कि धर्म दुनिया से जाता रहा—मगर याद रखना ॥ (शेर)

दिल मोम का नहीं है जो चुटकी से तोड़ दे ॥
दुनिया में कौन है जो मेरे दिलको मोड़ दे ॥
हमारे शील पर गर आंख कोई भी उठाएगा ॥
जमीं फट जाएगी और आस्मां चक्कर में आएगा ॥
अगरचे स्त्री हूं और गरदिश में सितारा है ॥
मगर हूं सारे सतियों में शील संजम को धारा है ॥

(गाना—चाल नाटक—तुम कौन तुम कौन हो प्यारे)

है कौन—है कौन—है कौन जहां में—
देखे जरा भी मेरी तरफ़ को आन ॥
यह बातें—यह बातें—यह बातें जब से सुनी हैं मैंने—
हो रहा दिल परेशान—है कौन ॥

(दोहा) जानूं हूं सर का ताज में एक भविसदत्त गुणवान को ॥
समझूं पिता सुत भ्रात बराबर और सारे जहान को ॥
हां हां वह शौकत वाला—हां हां सत् जिन व्रत वाला ॥
वह ही मन मोहन वाला—
मेरे मन और नहीं कोई आन—अय ज़ीशान ॥हैकौन ॥

राजा बेटी हमने इस बात पर बखूबी ग़ौर किया है--जो कुछ होगा इन्साफ़ होगा-घबराओ नहीं-दिलमे तसल्ली रक्खो।

तिल० हे पिता आप धर्मात्मा हैं—इस पृथिवि के राजा हैं मुझे आपके दरबार में इन्साफ़ की उमीद है ॥

(तिलकासुन्दरी का बैठ जाना)

राजा इस बद अंजाम मुआमले को सुनकर हम इज़हारे अफ़सोस करते हैं—हमारे शहर में ऐसे भद्दे फ़ेल का होना निहायत शरमनाक बात है ॥

(शेर) बड़ा अफ़सोस है जो शरीफ़ ऐसा काम करते हैं ॥
नगर को राज को घरबार को बदनाम करते हैं ॥
मंत्री साहब अब बहुत देर हो गई है—दरबार बरख़ास्त किया जाए—कल फिर इसी वक्त आम दरबार किया जाए—जुमले हाज़रीन फिर हाज़िर हों—और कमलश्री को भी बुलाया जाए--हम इस मुआमले में आख़ीरी हुकम सुनाएंगे--साबित हो गया है कि भविसदत्त दर असल एक धर्मात्मा--बहादुर और गुणवान महाजन है--हम इस से निहायत खुश हैं और अपनी लड़की

सुमता को इससे शादी करते हैं ॥ (अभिनदन के हाथ में सुमता का हाथ देना)

परियां (परियों का मुबारकबाद गाना) (राग कानड़ा-नाटक)

प्यारा प्यारी हमेशा रहे शाद हां ॥
राजा की प्यारी है-माता की प्यारी है ॥
सत्य की क्यारी सुमता जान ॥
(तान) रेनी धानी पाधा मापा ॥ शाद हां ॥
प्यारा प्यारी हमेशा रहे शाद हां ॥
नाचना गाना है भारी-शोभा है सुंदर न्यारी ॥
शाद हां-प्यारा प्यारी हमेशा रहे शाद हां ॥
देखना भालना कैसी सूरत है प्यारी न्यारी ॥
फुलवारी गुलकारी गुलशन-हैं आज सारी सारी ॥
शाद हां-प्यारा प्यारी हमेशा रहे शाद हां ॥

(आम दरबार का परदा)
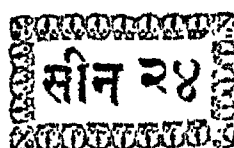
(सब दरबारियों का बैठे हुवे नजर आना-धनदे सेठ का आना-राजा साहेब का तशरीफ लाना-रूपलक्ष्मी का शृंगार किये हुवे आना-सुमता का दुलहन के लिबास में आना-अभिनन्दन का शादी लिबास में पधारना-तिलकासुन्दरी का राणी के लिबास में प्रवेश करना-राजा का हुकम सुनाना-कोतवाल का पकड़ना और बधुदत्त को काला मुंह करके निकालना-धनदे सेठ का रूपलक्ष्मी से मुआफी मांगना और रूपलक्ष्मी का माफ देना-राजा

का भविसदत्त और तिलकासुन्दरी दोनों को राजतिलक करना और परियों का मुबारकबाद गाना—और तमाशा खतम होना)

राजा (हुक्म सुनाना) हमने इस मुआमले को अव्वल से आखिर तक बग़ौर सुना--शहर के मुखिया पंचों से भी मशवरा किया--हम इस मुआमले में हस्बे जैल हुक्म सुनाते हैं:--

(१) बधुदत्त दर असल बदकार दग़ाबाज़ है और इसने जो जो बदमाशी की हैं वह अपनी माता सरूपा की सलाह से की हैं—लिहाज़ा इन दोनों को काला मूंह करके हमारे नगर से निकाल दिया जाए ॥

(२) अगरचे धनवे की निसबत भी हमारा खयाल कुछ अच्छा नहीं है—मगर चूंकि पंच साहेबान इसकी सिफ़ारिश करते हैं—लिहाज़ा यह बदस्तूर सेठ की पदवी पर क़ायम रहे ॥

(३) कमलश्री को जो धनवे ने बिला वजह पीहर में निकाला है यह अमल इसका धर्म शास्त्र के विरुद्ध है इसलिए धनवे कमलश्री से सरे दरबार मुआफ़ी मांगे

(४) भविसदत्त वास्तव में धर्मात्मा, बहादुर और गुणवान है इसलिये हम इसको शहर का प्रधान बनाते हैं ॥

(५) तिलकासुन्दरी जो अपने इमतिहान में पूरी साबित हुई है-दर असल भविसदत्त की ब्याहता स्त्री है इसलिये भविसदत्त को दी जाए ॥

(६) हम अविमदन और तिलकासुन्दरी और कमलश्री से निहायत खुश हुवे—उनका चाल चलन और बरताव काबिले तारीफ़ है—लिहाज़ा हम कमलश्री को प्रधान सियाणी की पदवी देते हैं—और अविमदन को राजा का और तिलकासुन्दरी को महारानी और रानी का पद देते हैं ॥

(७) मंत्री साहेब इस हुक्म की फ़ौरन अभी दरबार में तामील की जाए ॥

कोतवाल (वसुदत्त और मदना का काला मुंह करके) हुक्म इन दोनों को नगर से बाहर निकाला जाता है ॥

(निकाल देना)

धनदे (मुआफी मांगना) (गाना चाल कवाली—पै नहीं पहने जिस प्यारे पुरानी चूड़ियां)

हे सती तू बे खता मैं ही खतावारों में हूं ॥
बख्श दे मेरी खता मैं खुद शरमसारों में हूं ॥१॥
मैंने नाहक दुख दिया पीहर में तुझको भेज कर ॥
मैं गुनहगारों से हूं बल्के सितमगारों में हूं ॥२॥

कमल० (गाना—चाल कवाली)

कौन कहता है मुझे मैं नेक अतवारों में हूं ॥
मैं तो दुखियारों में हूं क़िस्मत से लाचारों में हूं ॥१॥
मैं जो कुछ होती तो रुस्वाई मेरी होती नहीं ॥
क्यों निकलती महल से मैं हाए नाचारों में हूं ॥२॥

आप तो महाराज हैं सरके मेरे सरताज हैं ॥
मैं तुम्हारी चर्ण रज तेरे परिस्तारों में हूं ॥ ३ ॥

धनवे (शैर) सर झुकाता हूं तेरे चर्णों में मुझको मुआफ़ कर ॥
जो सज़ा चाहे तु दे बेशक सज़ावारों में हूं ॥

कमल० (शैर) मत झुकाओ सर हमारे शील में लगता है दाग़
आप हैं परधान मैं ना चीज़ नाकारों में हूं ॥
आपने जो कुछ किया मैं कर सबर सब कुछ सहा
मैं नहीं करती शिकायत ना उज़्रदारों में हूं ॥

धनवे (शैर) जो नहीं करती शिकायत है इनायत आपकी ॥
मैं खुद इक़रारी हूं प्यारी अपनी इस तक़सीर का ॥

कमल० (शैर) कौन करता है गुमां नाहक़ तेरी तक़सीर का ॥
दोष जो कुछ है सरासर है मेरी तक़दीर का ॥

धनवे हे सती मैं हाथ जोड़ कर अर्ज़ करता हूं और अपने क़सूर की मुआफ़ी मांगता हूं—अब सँब रंजोग़म दूर करो—दिलको मसरूर करो ॥

कमल० हे पति मैं अपनी ज़ुबान को शिकवा शिकायत करने से रोक सकती हूं—मगर तुमने जो मेरे शीशए दिलको सरूपा की मोहब्बत के पत्थर पर मार कर चकनाचूर किया है इसका जोड़ना मुशकिल है और मेरी ताक़त से बाहर है ॥

(शैर) मेरा दिल लेके बालम आपने पत्थर पे दे मारा ॥
मैं कहती रह गई है है मेरा दिल है मेरा दिल है ॥

(गाना-चाल-कैसे कटेंगी रतियां)

दुख में बिताई रतियां हां हां पिया ॥ टेक ॥
जल बिना मीन-राम बिना मीना ॥
सो ही हमारी गतियां हां हां पिया ॥ दुखमें० ॥ १ ॥
सौतन संग सदा पिया राचे ॥
कभी ना पूछी बतियां हां हां पिया ॥ दुखमें० ॥ २ ॥

धनदे (चरणों में सर रखके) हे सती मैं आप के चरणों में सर रखता हूं और अपनी खताओं की मुआफ़ी चाहता हूं ॥

(शैर)

दुख दिया सब कुछ किया अब बख्श दे मेरी ख़ता ॥
मानता हूं मैं कि है मेरा ख़ता मेरी ख़ता ॥

(बहरे तबील) बदज़ात सरूपा ने खोया मुझे,
न इधर का रहा न उधर का रहा ॥
बधुदत्त ने तो ऐसा डबोया मुझे ॥
न इधर का रहा न उधर का रहा ॥१॥
मेरी लाज सती अब तो हाथ तेरे ॥
चाहे रख या न रख अख्तियार तुझे ॥
मैं तो दोनों जहान से जाता रहा ॥
न इधर का रहा न उधर का रहा ॥२॥

कमल० पति की आज्ञा में चलना हिंदू स्त्री का पहिला कर्म है-पति का हुकम मानना स्त्री का धर्म है-इसलिये स्वामी जी चाहे या न चाहें मैं आप के

हुकम की तामील करती हूं और आप का सब क़सूर मुआफ़ करती हूं ॥

(शैर) शिकायत कर नहीं सकती पति तेरी जुबां मेरी ॥
आप सरताज हैं मेरे मैं चर्णों की तेरी चेरी ॥ १ ॥
आप जो कुछ भी फ़रमाएं वही मंजूर है मुझको ॥
नहीं जी चाहता गरचे वले मंजूर है मुझको ॥ २ ॥
सज़ावारे सज़ागर हूं तो दे दीजे सज़ा मुझको ॥
सरे तसलीम खम है हर सज़ा मंजूर है मुझको ॥ ३ ॥

राजा धन्य है कमलश्री तुम्हारे पति भरता धर्म को हमारे राज में भविसदत्त जैसे धर्मात्मा और तिलकासुन्दरी जैसी महासती का होना सबके लिये सौभाग्य की बात है हम निहायत खुशी से दोनों को राजातिलक करते हैं ॥

(दोनों के सर पर ताज रखना)

परियां (मुबारकबाद गाना—चाल नाटक)
मुबारकबादी गाओ प्यारी राजा राणी की ॥
तिलका राणी की है—क्या प्यारी प्यारी—
सूरत न्यारी राजा राणी की ॥
हथनापुर में भविसदत्त को तिलक मिला है शाहीका॥
कलियां—खिलियां—हरियां—भरियां—शादियां—
मचियां—राजा राणी की ॥

भवि० (धर्म उपदेश देना) (दोहा)
सब कोई सुखको चहें । दुख चाहे नहीं कोय ॥

पर सुख मिलना है नहीं। कहो सो कारण कौन ॥१॥
पाप करें हिंसा करें। करें न पर उपकार ॥
सम्यक संजम ज्ञान बिन। कौन बने हितकार ॥२॥
चारों गति भ्रमता फिरे। और सहे बहु पीर ॥
धर्म बिना इस जीव की। कौन बंधावे धीर ॥३॥
जीव अनादि काल से। पड़ा करम के फंद ॥
जब लग निज पर ना लखे। कटे नहीं दुख द्वंद॥४॥
क्रोध मान माया सभी। काम लोभ दुखकार ॥
वैरी हैं इस जीव के। देखो आंख पसार ॥५॥
याते विषय कषाय तज। करो धर्म चित लाय ॥
धर्म करे संसार सुख। धर्म मोक्ष ले जाय ॥६॥

परियों का धर्म की महिमा वर्णन करना

(गाना—चाल नाटक—धर्म पिता की प्रीति से सुख पाओ सदा)

धर्म हितैषी, है सबका मन लाओ सदा ॥
सुख करतारा—दुख हरतारा—
है सबका मन लाओ सदा ॥ धर्म० ॥ टेक ॥
आतम का ध्यान धरो—निज पर का ज्ञान करो ॥
विद्या का दान करो सुख का सामान करो ॥
मायाचारी—और बदकारी—हीनाचारी—
चोरजारी—देखो ऐसी मत करो नादान ॥
नित संजम धारके—अघ टारके ॥
सुख पाओ सदा ॥ धर्म० ॥ १ ॥
(दोहा) दया धरम का मूल है दया स्व पर हितकार ॥

वैरी हैं इस जीव के बिषय कषाय बिकार ॥
सब जीवों से प्यार करो—हिंसा का परिहार करो ॥
दया का बिचार करो—न्यामत पर उपकार करो ॥
लाओ सदा—धर्म हितेषी है सबका मन लाओ सदा ॥

(ड्रोप सीन)

इति न्यामत सिंह रचित भविसदत्त तिलकासुन्दरी नाटक समाप्तम् शुभम् ॥

——:0:——

(मिति आषाढ़ शुदी ८ सम्बत् १९७६
श्री वीर निर्वाण सम्बत २४४५)
ता० ५ जूलाई सन् १९१९ ॥